 ੧ੳ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४५
वर्ष ७ अंक २ अक्तूबर 2013

संपादक : सिमरजीत सिंघ एम. ए, एम. एम. सी.
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ एम. ए, एम. एम. सी.

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥१॥
मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवन बिरथा ॥रहाउ॥
बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥
तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥२॥
जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥
मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥३॥
हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालहि मारगि पंथा ॥
हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥४॥ *(पन्ना ६९६)*

जैतसरी राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी गुरु की महत्ता को दर्शाते हुए फरमान करते हैं कि जब से (सच्चे) गुरु ने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा है तब से मेरे हृदय में रत्न की भांति प्रभु का कीमती नाम बस गया है। परमात्मा रूपी गुरु ने जिस-जिस मनुष्य को प्रभु-नाम बख़्शिश किया उनके अनेकों जन्मों के दुख दूर हो गए तथा उनके सिर से पापों का ऋण उतर गया। हे मेरे मन! परमात्मा का नाम-सिमरन किया कर। वही सारे अर्थ देने वाला है; वही पूर्ति करने वाला है। पूर्ण गुरु ने प्रभु-नाम-सिमरन की युक्ति बताई है। बिना नाम-सिमरन के मानव-जीवन व्यर्थ चला जाने वाला है।

गुरु जी का आगे फरमान है कि जो मनमुख हैं, जो अपने मन के पीछे लगकर चलते हैं, वे सदा मोह-माया में उलझे रहते हैं अर्थात् जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बनकर रहता है वो सांसारिक मोह के ताने-बाने में ही उलझा रहता है। ऐसे लोगों ने कभी साधु पुरुषों की संगत नहीं की होती, उनका सहारा नहीं लिया होता और उनका अनमोल मानव-जीवन व्यर्थ चला जाता है। दूसरी ओर जो लोग गुरु-चरणों का सहारा लेते हैं; साधु पुरुषों की संगत करते हैं, उनका इस जहां में आना सफल हो जाता है; वे अपना जीवन सफल कर लेते हैं। हे प्रभु! मुझ पर भी कृपा करो, दया करो, मुझे अपने दासों का ही दास बना लो।

शबद की अंतिम पंक्तियों में चौथे पातशाह फरमान करते हैं कि हमारे पास आध्यात्मिक दृष्टि वाले नेत्र नहीं हैं; हम आध्यात्मिक ज्ञान से कोरे हैं; हमें अच्छे मार्ग की पहचान नहीं है, इसलिए हम आपके दर्शाए मार्ग पर नहीं चल सकते। हे प्रभु! हम पर रहमत करो; हमें अपना आश्रय प्रदान करो; हमें अपना दामन थमाओ, ताकि हम आपके दर्शाए मार्ग पर चल सकें, आपका अनुकरण कर सकें, जिससे हमारा इस जहां में आना सफल हो जाए; हम अपना जन्म सफल कर आवागमन के चक्र से मुक्त हो सकें। 



पोथी परमेसर का थानु

विश्व भर में सर्वसांझीवालता की मिसाल कायम करने के लिए सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा बहुत बड़ा योगदान डाला गया। अलग-अलग देवताओं को अपना इष्ट मानकर अपनी विचारधारा को एक-दूसरे से श्रेष्ठ बताने के चक्र में समस्त भारत वर्ग-विभाजन में बंट चुका था। रोज़मर्रा के लड़ाई-झगड़े, दंगे इस वर्ग-विभाजन की विशेष देन थे। गुरबाणी में इस बात की ओर संदेश करते हुए फरमान किया गया है, *"खहि मरदे बाह्मणि मउलाणे"* ॥ भारत में धर्म वास्तव रूप में समझने की जगह फ़जूल के कर्मकांडों तक सीमित होकर रह गया था। इस बात को गुरबाणी में *"धरमु पंख करि उडरिआ"* कहकर बयान किया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने वर्ग-विभाजन को खत्म करने को प्राथमिकता देते हुए सबसे पहला उपदेशक नारा लगाया कि सारी सृष्टि का मालिक अकाल पुरख है तथा सारी दुनिया उसी की पैदाइश है, इसलिए सारे ही परस्पर भाई-भाई हैं। अलग-अलग धर्मों से सम्बंधित मनुष्य, जो गुरु जी के पास गए, गुरु जी ने उन्हें सबसे पहले उपदेश यही दिया : *"ना कोइ हिंदू ना मुसलमान"* अर्थात् जो मनुष्य उनके पास आकर उनकी विचारधारा को ग्रहण करना चाहते हैं वे न हिंदू हैं और न ही मुसलमान। वे अकाल पुरख की संतान होने के कारण आपस में भाई-भाई हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं है। नि:संदेह समय-समय इस दिशा में अन्य गुरु साहिबान भी कार्यशील रहे तथा यह सर्वसांझीवालता की लहर बन गयी। गुरु साहिबान ने तपती लोकाई के हृदय को शीतल करने हेतु अपनी बाणी की रचना के साथ-साथ अन्य अलग-अलग वर्ग, धर्म, जाति आदि के महापुरुषों की बाणी को एकत्रित करने का बहुमूल्य कार्य किया जो रहती दुनिया तक गुरमति की रौशनी को बांटता रहेगा। शहीदों के सिरताज पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने सारी बाणी को एक जगह एकत्र कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में तैयार करने का बहुमूल्य कार्य किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के साकार होने की प्रक्रिया को चाहे पांच शताब्दियों का समय लगा किंतु इसमें तीन घटनायें अहम हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी ने १६०४ ई में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना कर भाई गुरदास जी का सहयोग लेते हुए गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब, श्री अमृतसर के पावन स्थान पर इस पुनीत कार्य को सम्पूर्ण किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जिल्दबंदी करवाने के बाद समूह संगत के साथ जाकर श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर में पहला प्रकाश किया। गुरु जी ने इसको *"पोथी परमेसर का थानु"* कहकर संगत को विलक्षण विरासत से सीख लेने की प्रेरणा की। समूह संगत को इससे उपदेश प्राप्त करके अपनी ज़िंदगी को सुनहरा बनाने की प्रक्रिया हेतु बाबा बुड्ढा जी को प्रथम ग्रंथी स्थापित किया गया।

द्वितीय खास-उल-खास घटना सन् १७०६ ई की है, जब दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दमदमा साहिब की पावन धरती पर विराजमान थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वक्त की नज़ाकत को समझते हुए नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी को अंकित कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सम्पूर्णता प्रदान की।

तृतीय घटना सन् १७०८ ई की है जब दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ (महाराष्ट्र) की धरती पर विराजमान थे। गुरु जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुता-गद्दी प्रदान करके गुरिआई की रस्म अदा की। गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की परिक्रमा की और माथा टेककर सब सिक्खों को उपदेश दिया कि आगे से देहधारी गुरु परंपरा समाप्त है। गुरु जी ने सिक्ख संगत को स्पष्ट रूप में हुक्म किया कि आगे से सिर्फ और सिर्फ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को ही गुरु मानना है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन वचन सिक्खों के लिए गुरु-हुक्म, गुरु-फरमान हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह भी उपदेश दिया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित पावन बाणी के भावार्थ को सुनने, मानने तथा अपनाने से सब प्रकार के दुख-कलेश दूर हो जाएंगे। इस पावन बाणी को मानने व अपनाने से मनुष्य अज्ञानता एवं कर्मकांडों से मुक्त होकर शारीरिक तथा मानसिक कष्टों से दूर रहेंगे।

आज पैसे की दौड़ में एक-दूसरे के आगे निकलने की लालसा में सारी दुनिया ने अपनी आने वाली नसलों को तबाही के किनारे पर ला खड़ा कर दिया है। ज़रूरत है ज्ञान के भंडार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से ज्ञान हासिल करके उस पर अमल करने की। अकाल पुरख ने अपने भंडारों में से सबको हर एक वस्तु एक समान बख़्शी है। उसके लिए कोई छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब, छूत-अछूत नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हर एक मनुष्य को कुदरत का सत्कार करने तथा हक-सच की पावन कमाई करके अपने परिवार की पालना करने एवं जरूरतमंदों की यथाशक्ति सेवा करने का संदेश देते हैं। इससे हमारे मन में खुशी की लहर उपजती है जो हमारे शरीर व मन को अथाह खुशी देती है, जिससे हमें अकाल पुरख की समीपता का एहसास होता है। किसी पराई वस्तु पर धोखे से कब्ज़ा करना या अपने काम के प्रति पूर्ण समर्पित न होना अकाल पुरख की नाराज़गी का कारण बनता है। गुरबाणी में इसके प्रति बहुत सख़्त शब्दों में वर्णन करके उपदेश किया गया है : *"हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥"*

आज सिक्ख पूरे विश्व में फैलकर अपनी विलक्षण पहचान कायम कर चुके हैं। दुनिया में जहां-जहां भी सिक्ख गए उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होकर सबसे पहले गुरुद्वारा साहिब का निर्माण करवाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया। इसके पीछे सिक्खों की अपने परिवार, देश, धर्म तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से विछुड़ने की पीड़ा को समझा जा सकता है। विदेशों में गुरुद्वारा साहिबान के स्थापित हो जाने के कारण विदेशी लोगों को भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को समझने का मौका मिल रहा है। बहुत सारे विदेशी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं से प्रभावित होकर सिक्ख धर्म में प्रवेश कर फख़्र महसूस कर रहे हैं। जहां विदेशी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं से प्रभावित हो रहे हैं वहां साथ ही एक दर्दनाक पक्ष यह भी हमारे सामने है कि हम पैसे की दौड़ में अपने बच्चों को इस अनमोल विरासत से जोड़ने में नाकाम हो गए हैं। हमारे बच्चे टेलीविज़न तथा इंटरनेट की चकाचौंध में खो गए हैं। हमारा दादा-दादी, नाना-नानी से शिक्षाप्रद कहानियां सुनने का विरसा लगभग खत्म हो चुका है। आज हमारे बच्चे वही सीख रहे हैं जो उनको टेलीविज़न सिखा रहा है। आज हमें ज़रूरत है अपनी कमियों की तरफ दृष्टि डालने की। गुरु साहिबान द्वारा बख़्शी महान गुरमति से विहीन होकर हम दुनिया की भीड़ में खो जाएंगे। हमें तो गुरु साहिब ने हमेशा ही हर पक्ष से दुनिया से विलक्षण बनाकर खड़ा किया है, ताकि सिक्ख लाखों में खड़ा अकेला ही पहचाना जा सके। हमें आज सख़्त ज़रूरत है अपने विरसे से, गुरमति से तथा अपनी बहुमूल्य परंपराओं के साथ जुड़ने की तथा अपने बच्चों को जोड़ने की, ताकि हम गुरु साहिबान द्वारा बख़्शे गुरमति के ज्ञान से पूरी दुनिया को प्रकाशमान कर चारों ओर खुशहाली तथा भाईचारे को कायम कर सकें।

श्री गुरु रामदास जी : जीवन परिचय

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

श्री गुरु रामदास जी का जन्म लाहौर के चूना मंडी क्षेत्र में २५ आश्विन, संवत् १५९१ तद्नुसार २४ सितंबर, सन् १५३४ को हुआ था। आपकी माता जी का नाम माता दइआ कौर था, जोकि आपकी अल्प आयु में ही प्रभु-चरणों में जा विराजी थीं। आपके पिता जी का नाम श्री हरिदास था। बाल श्री (गुरु) रामदास जी की आयु उस वक्त सिर्फ़ सात साल की थी, जब उनके पिता भी अकाल चलाना कर गए।

गुरु जी का पहला नाम 'जेठा' था। उनकी ननिहाल गांव बासरके में थी। नानी जी अपने नाती भाई जेठा जी को गांव बासरके में ले आईं। यहां वे पांच वर्ष तक रहे। बारह वर्ष की उम्र (सन् १५४६) में भाई जेठा जी को श्री गोइंदवाल साहिब जाने का सुअवसर मिला। इसके छ: वर्ष बाद सन् १५५२ में श्री गुरु अमरदास जी भी गुरु-पद पर सुशोभित होकर श्री खडूर साहिब से श्री गोइंदवाल साहिब में आ विराजमान हुए थे। भाई जेठा जी घुंघनियां (चने के उबले दाने) बेचकर गुज़ारा किया करते थे। इनके मीठे स्वभाव से श्री गुरु अमरदास जी प्रभावित हुए थे। वर्षों तक वे भाई जेठा जी को निकट से देखते रहे, जानते-समझते रहे। फिर मन ही मन में उन्होंने भाई जेठा जी के बारे में कुछ निर्णय ले लिए।

सन् १५५३ में श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी छोटी बेटी बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ कर दिया। बीबी भानी जी का जन्म २ फरवरी, १५३४ ई को गांव बासरके में हुआ था। इसका अर्थ हुआ कि बीबी भानी जी उम्र में अपने पति से कुछ माह बड़ी थीं। लतीफ़ ने वर्णन किया है कि उनका नाम तो 'मोहनी' था, किंतु सदैव 'भाणा' (रज़ा) में रहने के कारण उन्हें 'भानी' कहा जाने लगा। बीबी भानी जी हमेशा सेवा में जुटे रहते थे।

भाई जेठा जी भी अपने स्वभावानुसार गोइंदवाल साहिब में दिन-रात सेवा में जुटे रहते थे। यहां पर बाउली (बावली, जलकुंड) की खुदाई का काम आरंभ हो चुका था। बेशक वे रिश्ते में श्री गुरु अमरदास जी के दामाद थे, परंतु सांसारिक रिश्ता त्यागकर वे सेवा का कर्त्तव्य निभाते रहे। इस संबंध में 'बंसावलीनामा' में अति सुंदर वर्णित किया गया है :

साक न जाता, हृदय रख्या सेवकी भाओ।
चचलाई चत्राई, न खेडण हसण दा चाओ।
प्रीत चरनां दी सेवकी रखी।
बिना सतिगुर होर न देखण अक्खीं।
बरस अठाई सेवकी कीती सहुरे न जाते।

सन् १५६६ में बादशाह अकबर श्री गुरु अमरदास जी के दरबार में आया और बीबी भानी जी के नाम पर झबाल का परगना लगा गया। श्री गुरु अमरदास जी ने भाई जेठा जी को नया नगर (गुरु का चक्क, रामदासपुर, श्री अमृतसर) बसाने का आदेश दिया। १८८३-८४ ई में गज़टियर में यह लिखा पाया गया कि यह जगह, जहां 'गुरु का चक्क' बना, श्री गुरु रामदास जी ने तुंग गांव के ज़मींदारों से ७०० रुपए में खरीदी थी। सन् १७९७ तक इसका नाम 'गुरु का चक्क' प्रसिद्ध रहा। ब्राऊन के

*बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; मो. ९८७२२-५४९९०

बनाये नक्शे में दोनों नाम-- 'अमृतसर' तथा 'गुरु का चक्क' मिलते हैं।

श्री गुरु रामदास जी के घर में बीबी भानी जी की कोख से तीन पुत्रों ने जन्म लिया--सन् १५५७ में प्रिथी चंद ने, सन् १५६० में महादेव ने और सन् १५६३ में श्री (गुरु) अरजन देव जी ने। गुरु जी ने अभी अपनी ठौर (ठिकाना) गोइंदवाल साहिब में ही रखी हुई थी।

श्री गुरु अमरदास जी ने उनमें लगन, समर्पण, सिमरन, सेवा व आदेश (गुरु का) मानना जैसे गुण देखकर उन्हें सन् १५७४ में गुरगद्दी सौंप दी। भाई जेठा जी श्री गुरु रामदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने लगभग सात साल गुरगद्दी की ज़िम्मेदारी को संभाले रखा।

श्री गुरु रामदास जी सन् १५७४ में ही गोइंदवाल साहिब छोड़ श्री अमृतसर में आ विराजे। उन्होंने अपना पूरा ध्यान नगर बसाने पर लगा दिया। इसे एक व्यापारिक केंद्र बनाने हेतु भिन्न-भिन्न व्यवसायों एवं पेशों से जुड़े लोगों को प्रेरित कर यहां बसाया। यह नगर बसाने का लोगों पर सबसे बड़ा प्रभाव यह पड़ा कि सांसारिक कार्य करते हुए भी धर्म को कायम रखा जा सकता है। व्यापार शुरू करने के बारे में धार्मिक लोगों के मन में जो विरोधी विचार थे, वे दूर हो गए। सिक्खों ने व्यापारिक कामों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया।

मसंदों की नियुक्ति : श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु 'मंजी व्यवस्था' द्वारा भिन्न-भिन्न जगहों पर बाईस मसंदों की नियुक्ति की। मसंद शब्द फ़ारसी के 'मस-नद' शब्द का तद्भव रूप है। मुगल बादशाह को 'मसनदे आली' भी कहा जाता था। 'मसनद' का आम अर्थ है-- ऊंची जगह वाला। गुरु-घर के ये प्रचारक चारपाई, चबूतरे या अन्य ऊंची जगह पर बैठकर धर्म का प्रचार किया करते थे, इसी लिए इनको 'मसंद' कहा जाना बिल्कुल ठीक था। ये मसंद साल में एक या दो बार दीवाली, वैसाखी को श्री अमृतसर में ज़रूर पहुंचते थे।

मर्यादित रीतियों को सुदृढ़ बनाना : श्री गुरु अमरदास जी ने अनंद कारज (विवाह) की रीति (रस्म) जारी करवाई थी और श्री गुरु रामदास जी ने उस रस्म को और सुदृढ़ बनाने हेतु सूही राग में चार लावां (फेरे) के ज़िक्र वाली बाणी उच्चारण की। इस बाणी द्वारा दाम्पत्य जीवन को सफलता का रास्ता मिलता है। उन्होंने संसार को प्रवृत्ति-कर्म दृढ़ करवाया। निवृत्ति-कर्म तो पहले ही बहुत लोग बतला चुके थे। गुरु जी ने हम सबको अच्छे ढंग से संसार में रहने का मार्ग सुझाया। विवाह-बंधन में बंधने वाली जोड़ी को प्रभु-याद के अलावा निर्मल भय, विछोह, विरहा व सहज अवस्था में विचरने का ढंग इन चार लावों द्वारा बताया। गाये जाने वाले वैवाहिक गीत (घोड़ीआं) की अवधारणा पर उन्होंने वडहंस राग में शबद भी रचे। *"कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ"* वाला महाउपदेश गुरु जी ने दिया। अब सिक्खों के पास जन्म, विवाह व अंतिम समय के संस्कार के महावाक थे। सिक्ख इन पर चलकर एक मार्यादा में जुड़ने लगे। नित्यप्रति की मर्यादा के लिए गुरु साहिब ने *"गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥ उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥ उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥"* का हम सबको उपदेश दिया। उठते, बैठते, कार्य करते हुए, सांसारिक रीतियों को निभाते हुए भी प्रभु-सिमरन में लगे रहना चाहिए। उन्होंने हमें शाम को सो दरु व रात को

सोहिला बाणी के माध्यम से जुड़ने का भी उपदेश दिया। गुरु-उपदेश को अगर गुरु-आदेश मान लिया जाए तो हमारा जीवन सफल हो जाता है और हमें भरपूर गुरु-प्यार मिल जाता है।

उदासी संप्रदाय के साधुओं से मिलाप : बाबा श्रीचंद जी स्वयं श्री गुरु रामदास जी को मिलने के लिए आए। बाबा जी गुरु जी की नम्रता से बेहद प्रभावित हुए। इस सुनहरी मेल-मिलाप ने सिक्खी के प्रचार-प्रसार में बढ़ोतरी की। उदासी साधु गुरबाणी का गहरा व अच्छा ज्ञान रखने वाले महापुरुष होते हैं। इन्होंने सिक्खों में गुरबाणी की लगन पैदा की। उदासी संप्रदाय ने सिक्ख धर्म के आदर्शों व उद्देश्यों के प्रचार के लिए नि:स्वार्थ सिक्ख प्रचारक दिए।

श्री गुरु रामदास जी ने सिक्खी के महल की तामीर के लिए मज़बूत ईंटे (प्रचारक) लगाईं। तभी तो कहा जाता है कि सिक्ख धर्म का महल मज़बूत व खूबसूरत बना है।

गुरु-घर में सेवा, सिमरन, समर्पण, ईमानदारी, नैतिकता, उच्च आदर्शों तथा उसूलों को महत्त्व दिया जाता है, सांसारिक रिश्तों-नातों को नहीं। यहां बड़े-छोटे का अंतर नहीं रखा जाता। श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी की अद्वितीय व महान परंपरा को निभाते हुए अपने सबसे छोटे सुपुत्र श्री (गुरु) अरजन देव जी को सब तरह से योग्य पाते हुए सन् १५८१, सितंबर माह में गुरगद्दी सौंप दी और ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु रामदास जी ने ३० रागों में बाणी का उच्चारण किया। उनकी बाणी में विरह व प्यार का रंग बहुत सुंदर बन पड़ा है। जीवन की प्रत्येक उलझन को सुलझाती है उनकी रची हुई बाणी। धन्य हैं श्री गुरु रामदास जी!



कविता

इबादतगाह

प्यार इबादत भी है
प्यार एक फर्ज़ भी है
रोगियों की सेवा करना
गुरु हरिराय जी से प्रेरणा लेना
गुरु हरिक्रिशन जी के मार्ग को अपनाना
भक्त पूरन सिंघ के पद्‌चिन्हों पर चलना
निर्धनों की मदद करना
महाराजा रणजीत सिंघ जैसा उदार होना
और सच्चा समाज-सुधारक बनना।
भूखों को भोजन खिलाना
सच्चे सौदे की सीख को याद रखना
"लंगर दउलति वंडीए" परंपरा को आगे बढ़ाना
प्यासों को पानी पिलाना
भाई घनईया जी का फ़लसफ़ा अपनाना।
ऐसे होता है इज़हार प्यार का
ऐसे निभाया जाए फर्ज़ प्यार का
इस तरह की जाती है इबादत
"जिनि प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पइओ ॥"
इंसान वही, जो करे सबसे मोहब्बत।
गिरे हुओं को उठाना
भटकों को राह दिखाना
गैरों को गले लगाना
दुखियों को दिलासा देना
इस तरह प्यार निभाना
प्यार का फर्ज़ निभाना
यही तो है सच्ची इबादत
यही तो है सच्ची मोहब्बत
यही तो है मन को खुदा बना लेना
यही तो है तन को इबादतगाह बना लेना।



श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित बाणी 'लावां' का महत्त्व

-डॉ. जगजीत कौर*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी सम्पूर्ण, संस्कारवान, उत्तम कोटि के मनुष्य की सृजना का दिशा-निर्देश करती है। यह पावन बाणी, सच्ची बाणी, गुरु साहिबान द्वारा अकाल पुरख वाहिगुरु के चरणों से जुड़ गहन तल्लीनता की अवस्था में प्राप्त अनुभूतियों की अभिव्यंजना है। इस बाणी में उन आदर्शों की प्रतिष्ठा की गई है जो प्रत्येक मनुष्य को ऐसी आदर्श जीवन-युक्ति से जीने की राह सुझाती है जिस राह पर चलकर वह सम्पूर्ण मानव, संस्कारवान, सभ्य, स्वस्थ चेतना सम्पन्न नागरिक, एक उत्तरदायी लोक सेवक, परोपकारी जीव के साथ-साथ उच्च आध्यात्मिक चेतनापूर्ण परमार्थ पथ का जिज्ञासु साधक भी बन सकता है। गुरबाणी उत्तम संस्कारों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। आदर्श संस्कारों के रूप में उसमें आत्मिक विकास के लिए गुरु-शरण में आकर नाम-सिमरन,, प्रभु-भक्ति के साथ अत्यंत सहजता, सादगी, पवित्रता, ईमानदारी से जीवन व्यतीत करते हुए भक्ति-योग और संयत-भोग का आनंद-लाभ करते हुए अंत सहज आनंद में विलीन होने का जीवन-मनोरथ दर्शाया गया है। इस सारी जीवन-युक्ति को रहित मर्यादा में बांध संस्कारों का नाम दिया गया है।

सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार सिक्ख के जीवन में तीन प्रमुख संस्कार माने गए हैं। पहला है-- जन्म व नामकरण संस्कार; दूसरा है-- अनंद संस्कार और तीसरा है-- मृतक संस्कार। इस सभी संस्कारों का निर्वाह करने के लिए हमें गुरबाणी से ही दिशा मिलती है। गुरु के सिक्ख ने गुरबाणी में निहित आदर्शों के अनुसार ही इन समयों में व्यवहार करना होता है, जिससे उसका व्यवहारिक और परमार्थक जीवन सुखदायी बनता है।

इन संस्कारों के निर्वाह की योजना गुरमति के अनुसार हो इसके लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा 'सिक्ख रहित मर्यादा' प्रकाशित कर निश्चित किया गया है कि गुरु के सिक्ख के जीवन के प्रत्येक संस्कार को उसी विधान के अनुसार सम्पन्न किया जाए।

इन संस्कारों में 'अनंद (विवाह) संस्कार' का प्रमुख स्थान है। गुरमति में विवाह (गृहस्थ) को धर्म माना गया है और धर्म भी सभी धर्मों में श्रेष्ठ, क्योंकि वस्तुतः इसी धर्म-बंधन के द्वारा युवा मानस गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है, अपने दायित्वों को पहचानता है, अपने जीवन-दाता परमात्मा के प्रति, जन्म-दाता, माता-पिता, परिवार, समाज, देश, कौम, पंथ के प्रति कुछ कर देने का उसमें उत्साह जागृत होता है और एक आदर्श मानव के रूप में उसका व्यक्तित्व निखरता है। ये सभी दायित्व उसे अत्यंत उल्लास, उत्साह और हर्ष के साथ निभाने हैं, इसी लिए सिक्ख बच्चे-बच्ची के विवाह को 'अनंद कारज' का नाम दिया गया है। अनंद कारज फर्ज़ों से भरपूर जीवन में प्रवेश का द्वार है, जिसमें आनंद सहित प्रवेश करना है। इन

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१; मो. ९४१२४-८०२६६

फर्ज़ों को दंपति ने खुशी-खुशी निभाना है। आनंद ही सफल विवाहित जीवन की कसौटी है। गुरमति में विवाह केवल दो व्यक्तियों का ही मिलन नहीं है, यह दो आत्माओं का भी मिलन है। श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार :

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥
(पन्ना ७८८)

जब विवाहित दंपति एक-दूसरे को आत्म रूप में मानेंगे, शरीर और शरीर से सम्बंधित गुणों-दोषों को नज़रंदाज़ करेंगे तो यकीनन आत्मिक आनंद का स्रोत बनकर एक-दूसरे के पूरक सिद्ध होंगे और आत्मिक आनंद में विचरण करते हुए सहज अवस्था को प्राप्त होंगे। यह सारी प्रक्रिया श्री गुरु रामदास जी ने सूही राग में रचित चार बंदों के द्वारा स्पष्ट की है। गुरमति मर्यादा के अनुसार सिक्ख का अनंद कारज इस पावन बाणी के निर्देशानुसार ही किया जाता है। इन चार बंदों को 'चार लावां' करके मानने की मर्यादा है। इन्हीं चार बंदों के मुताबिक ही विवाह ही रस्म का निर्देश रहित मर्यादा में है।

"विवाह के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में दीवान सजाया जाए। लड़के-लड़की को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में लाकर बैठाया जाए। लड़के-लड़की और उनके माता-पिता को खड़ा कर 'अनंद' की आरंभता की अरदास की जाए। सूही राग में रचित श्री गुरु रामदास जी की लावां बाणी के आशय के अनुसार जोड़ी को गुरमुख जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी जाए। गुरमुख जीवन मर्यादा का पालन करने की प्रवानगी में वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सामने माथा टेकें। इसके बाद लड़की का पिता या मुखिया या संबंधी लड़के का पल्ला लड़की के हाथ में पकड़ाए और गुरु साहिब के 'ताबिआ' बैठे ग्रंथी सिंघ जी सूही राग में श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित बाणी 'लावां' का एक-एक बंद का पाठ सुनाए। प्रत्येक बंद के पठन के बाद रागी सिंघ बाणी का गायन करें और आगे लड़का, पीछे लड़की श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा करें। परिक्रमा करने के पूर्व माथा टेकें और परिक्रमा के बाद भी। यह प्रवानगी का प्रतीक है। इसी तरह चार बार चार 'लावां' का पाठ और तब गायन, परिक्रमा और माथा टेककर सुभाग जोड़ी बैठ जाए। अनंद साहिब की पहली पांच पउड़ीआं तथा अंतिम पउड़ी का पाठ किया जाए। फिर अरदास के साथ अनंद कारज की रस्म संपूर्ण हो जाती है।"

दरअसल गुरु साहिब द्वारा रचित चार 'लावां' की बाणी अत्यंत सारगर्भित है और गृहस्थ जीवन की सम्पूर्ण अध्यात्म-क्रिया को अपने में समेटे हुए है। पहला बंद 'पहिलड़ी लाव' में गुरु साहिब बताते हैं :

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥. . .

पहली लाव में ही स्पष्ट कर दिया गया है कि विवाह संस्था में प्रवेश, गृहस्थ आश्रम में प्रवेश प्रवृत्ति मार्ग में प्रवेश करना है। सिक्ख धर्म निवृत्ति का मार्ग नहीं है। गुरु साहिबान की शिक्षाएं सिक्ख को समाज-परिवार में रहकर प्रत्येक कठिन परिस्थिति का सामना करने की प्रेरणा देती हैं। समाज में विचरण करते समय पुरुष-स्त्री के जीवन में कई प्रकार के उतार-चढ़ाव आते हैं; दुख-सुख, भयंकर कठिनाइओं का भी सामना करना पड़ सकता है, परंतु उन्हें इन

संघर्षों की चुनौती स्वीकार करनी है, भागना नहीं है। परस्पर सहयोग और परमात्मा में विश्वास, शबद-गुरु में आस्था, नाम-सिमरन करते हुए प्रत्येक स्थिति का सामना करना है। यही मानव धर्म है, मनुष्य जीवन के फर्ज़ हैं। इन पर दृढ़ता से आस्था बनाए रखनी है। इसी आस्था, विश्वास, धर्म-प्रवृत्ति की दृढ़ता के साथ एक-दूसरे के सहयोगी बन नाम-आराधन करते हुए सहज आनंद में प्रवेश करना है। ऐसे वडभागी दंपति को सहज आनंद की प्राप्ति होती है जो जीवन का चरम लक्ष्य है, चरम मनोरथ है :

सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥
जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥१॥ (पन्ना ७७३)

दूसरी लाव में गुरु साहिब उपदेश कर रहे हैं कि :

हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥
निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥
हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥. . . (पन्ना ७७३)

दूसरी लाव में श्री गुरु रामदास जी महाराज श्री गुरु अमरदास जी के *"एक जोत दुइ मूरती"* के भाव को स्पष्ट कर रहे हैं। पति-पत्नी के रूप में उस अकाल पुरख की ज्योति ही विद्यमान है। पति-पत्नी को यह समझना है कि सतिगुरु की कृपा से दंपति का यह मिलन परम ज्योति से ही मिलन है। सब जीवों में एक ही ज्योति विद्यमान है, इसलिए उस परमात्मा का ही आत्म प्रसार सभी में विद्यमान मानकर एक-दूसरे का आदर-सम्मान करना है। परमात्मा का निर्मल भय, जैसे जीव के लिए अपने मन में रखना जरूरी है, उसी प्रकार दंपति को भी एक-दूसरे के प्रति मन में निर्मल भय रखना है। ऐसा भय जिसमें आतंक, विरोध अथवा विद्रोह नहीं होता। ऐसा भय जो प्रेम, ममता, एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और भावनात्मकता से जुड़ा होता है। ऐसा शुद्ध, पवित्र, निश्छल भय हउमै को दूर करता है। पति-पत्नी के निर्मल सम्बंधों में हउमै का कोई स्थान नहीं होता। हउमै के भाव को दूर रखकर मन की सभी कलुषित भावनाओं को दूर कर, गंवाकर ही पति-पत्नी एक सुंदर आदर्श वैवाहिक जीवन का निर्वाह कर सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक पल प्रभु के गुणों का गायन करते हुए सर्वत्र में परमात्मा को ही प्रत्येक क्षण अपने निकट मानकर, अंतर में और वाह्य जगत में सर्वत्र परमात्मा की अवस्थिति को ही मौजूद मान, सदैव उसके ही विचारों में मगन रहकर आनंदपूर्ण और मंगलमय जीवन-यापन किया जा सकता है। विस्माद और आनंद की स्थिति में विचरण करते हुए, अंतर मन में निरंतर अनहद शबद, मधुर ध्वनि बजती रहेगी। मन सदा प्रसन्न और प्रफुल्लित रहेगा जो विवाहित जीवन का सार है। तीसरी लाव में गुरु जी फरमान करते हैं :

हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ (पन्ना ७७३)

तीसरी लाव में आध्यात्मिकता पर आधारित वैवाहिक जीवन की उस अवस्था का वर्णन किया गया है जब दूसरी लाव के विषय में विचरती आत्मा प्रेम-रंग में रंग जाती है। मन में वैराग्य

और प्रेम की तीव्र उत्पत्ति होती है। पति-परमात्मा को प्राप्त करने की प्रबल उत्कंठा उत्पन्न हो जाती है। पति-पत्नी एक-दूसरे के निकट हो एक-दूसरे के लिए त्याग करने को तत्पर रहते हैं। मन में कोई स्वार्थ की भावना नहीं रहती है, केवल ख्वाहिश रहती है निष्काम कर्म करने की। परस्पर गुणों को समझ-देखकर एहसास होता है कि वे असीम भाग्यशाली हैं। संत रूप सद्गुरु की कृपा से ही यह संयोग बना है, इसलिए जीवन में प्रत्येक क्षण, उस निर्मल हरि का प्रशस्ति-गायन, शबद-गायन, उसके गुणों का अनुवाद-गायन करने की चाहना बनी रहती है। सतिगुरु की कृपा से शुभ संयोग उपजा है। सतिगुरु के प्रशस्ति-गायन में ही जीवन के पल व्यतीत हों, ऐसा चाव, ऐसी लालसा, उत्कंठा उत्पन्न हो जाती है। आत्मिक उत्थान की ओर ले जाने वाला यह उत्साह विवाहित जीवन को सुखमय बना देता है।

चौथी लाव में आध्यात्मिक जीवन की चरम परिणति सहज अवस्था अथवा सहज प्राप्ति का संदेश दिया गया है :

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥
मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥. . . *(पन्ना ७७४)*

चौथी लाव जिज्ञासु के आत्मिक जीवन की उस अवस्था की द्योतक है जब साधक के भ्रम-अज्ञान के सभी पर्दे गुरु-कृपा से खुल जाते हैं, आत्मा में निर्मल प्रगास हो जाता है। वह साधना के मार्ग पर चलता, सतसंगति में नाम-सिमरन करता, प्रभु-भक्ति में लीन विकारों पर विजय पा लेता है। उसके माया के बंधन टूट जाते हैं। साधक धीरे-धीरे सहज रूप में साधना मार्ग पर चलता निहकामी हो जाता है और सहज अवस्था में प्रवेश करता है। मन में कोई द्वंद्व नहीं, कोई दुविधा नहीं, कोई संशय, शंका, संदेह नहीं, बस, *"उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥ नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥"* की अवस्था पर पहुंचता है। *"ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥"* की स्थिति को प्राप्त कर *"सूख सहज आनंद भवन ॥ साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही जनम मरन ॥"* इसी लाव में विवाहित जीवन की उस चौथी चरम अवस्था को पहुंच दांपत्य जीवन में असीम स्थिरता आ जाती है। कोई परस्पर का संदेह नहीं, संशय नहीं, प्रेम-विश्वास और एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण, आस्था, जीवन में आत्म-बल भरते हैं; प्यार-प्रेम, आत्मिक आनंद में तिरोहित हो सहज आनंद को प्राप्त होता है। चित्त स्थायी विगास, नित्य प्रफुल्लिता प्राप्त कर अविनाशी प्रेम, चिरंतन प्रेम की सहजता को प्राप्त होता है :

हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥ *(पन्ना ७७४)*

इस प्रकार श्री गुरु रामदास पातशाह जी द्वारा रचित 'लावां' वाली पावन बाणी गुरमति के अनुसार सिक्ख के अनंद संस्कार की मर्यादा सहित निर्वाह का जहां सुंदर दिशा-निर्देश करती है, वहीं उसके जीवन में आध्यात्मिक विकास के चार प्रमुख पड़ावों को भी स्पष्ट करती है। गुरु साहिब द्वारा रचित यह पावन बाणी अद्वितीय है, महत्त्वपूर्ण है। 

लावां बाणी : विषय वस्तु एवं महत्ता

*-डॉ. मनजीत कौर**

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने ३० रागों में पावन बाणी उच्चारण की। गुरु पातशाह द्वारा सूही राग में उच्चरित 'लावां' वाली बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना ७७३-७४ पर सुशोभित है।

सिक्ख धर्म में विवाह-रस्म को 'अनंद कारज' कहा जाता है। विद्वानों के चिंतनानुसार इस पद्धति का सूत्रपात श्री गुरु अमरदास जी तीसरे पातशाह द्वारा ४० पउड़ियों में उच्चरित पावन बाणी 'अनंदु साहिब' से हो चुका था। श्री गुरु रामदास जी ने चार लावां वाली बाणी की रचना की। 'लावां' शब्द का अर्थ 'भांवर' अथवा 'फेरे' है। सिक्खों की विवाह-रीति चार लावां द्वारा निभाने की मर्यादा कायम की गई है। अत: सिक्ख धर्म में प्रचलित अनंद कारज की रस्म में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में अरदास करके वर तथा वधू (दूल्हा तथा दुल्हन) श्री गुरु ग्रंथ साहिब की चार परिक्रमा करते हैं। इस दौरान पहले ग्रंथी सिंघ बारी-बारी एक-एक लाव का पाठ करता है तथा रागी सिंघ पुन: लावों का क्रमश: गायन करते हैं। प्रत्येक लाव के उच्चारण के बाद वर-वधू गुरु-हजूरी में माथा टेककर बड़ी सहजता एवं श्रद्धापूर्वक परिक्रमा करते हैं। परिक्रमा पूर्ण होने पर वर-वधू दोनों माथा टेककर अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। इस तरह चार फेरों के उपरांत अनंदु साहिब की छह पउड़ियों का पाठ तथा शुक्राने की अरदास होती है। इस तरह अनंद कारज संपूर्ण हो जाता है।

वस्तुत: ये लावां आत्मा रूपी स्त्री का परमात्मा रूपी पति से मिलन की शर्तों एवं उस अवस्था की प्राप्ति का क्रम से वर्णन है, जिस पर खरा उतरकर उस परम आनंद की प्राप्ति का सुअवसर नसीब होता है जिसके लिए जीव का जन्म हुआ है।

चार लावां वाली बाणी निम्न अंकित है, जिसका विषय-वस्तु इस प्रकार है :-

सूही महला ४॥
हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥
धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥
सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥
जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥१॥ *(पन्ना ७७३)*

स्त्री-पुरुष के विवाहित जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हुए श्री गुरु रामदास जी पहली लाव (फेरे) में जीव स्त्री को कर्मशील रहने हेतु प्रेरित करते हैं कि किस प्रकार जीव को परमेश्वर की बंदगी में हर पल लगे रहना है। हृदय-घर में प्रभु का सिमरन चलता ही रहना चाहिए। गुरु पातशाह पहली लाव में जीव के सामाजिक एवं आध्यात्मिक सम्बंध को दर्शाते हुए पावन फरमान करते हैं-- हे प्रभु! मैं तुम पर बलिहार जाता हूं। तुम्हारी रहमत से ही जीव-

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

स्त्री को प्रभु का नाम जपने की प्रेरणा मिली है और वास्तव में यही है प्रभु-पति से जीव-स्त्री के विवाह की पहली सुंदर लाव। पावन बाणी ही जीव-स्त्री हेतु ब्रह्मज्ञान है। हे भाई! अपने कर्त्तव्य-पथ पर दृढ़ रहो अर्थात् अपने कर्त्तव्य को धर्म मानकर उस दायित्व का मन-वचन-कर्म से पालन करो। प्रभु-सिमरन से ही पाप-कर्मों का विनाश होता है तथा हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है। हे भाई! परमेश्वर का नाम सिमरते रहो। मानव जीवन का परम लक्ष्य अर्थात् परम धर्म अपने हृदय-घर में दृढ़ कर लो। यह प्रेरणा सतिगुरु द्वारा प्रत्येक सिक्ख को मिली है। यही जीव के लिए स्मृति का उपदेश है। हे भाई! पूर्ण गुरु के इस उपदेश को शिरोधार्य करो अर्थात् पूर्ण गुरु की आराधना करो, जिसके फलस्वरूप समस्त विषय-विकार तथा पाप दूर हो जायेंगे। गुरु-कृपा से जिसके मन को प्रभु प्रियतम का नाम मीठा एवं मनभावन लगने लगे उस जीव को आत्मिक अडोलता (स्थिरता) का सुख प्राप्त होने लगता है अर्थात् ऐसी जीव-स्त्री किसी भी परिस्थिति में अपने जीवन-मार्ग (कर्त्तव्य-धर्म) से विचलित नहीं होती अर्थात् ऐसी भाग्यशाली जीव-स्त्री को स्थिरता की अवस्था का आनंद प्राप्त होता है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु रामदास जी पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का नाम जपना ही प्रभु प्रियतम से जीव-स्त्री के विवाह का पहला फेरा है, क्योंकि हरि-नाम-सिमरन से ही प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के मिलन का शुभारंभ होता है अर्थात् इस सम्बंध की शुरूआत होती है।

हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥
निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥
हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥
जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥ *(पन्ना ७७३)*

दूसरी लाव (फेरे) में गुरु पातशाह उस परिपूर्ण परमेश्वर पर बलिहार (कुर्बान) जाते हैं जिसने कृपा करके जीव-स्त्री को पूर्ण गुरु द्वारा जीवन की युक्ति (जीवन-जाच) बख़्शकर निहाल (आनंद-विभोर) कर दिया है। हे प्रभु जी! मैं तुम पर कुर्बान जाता हूं। तुम मेहर (रहमत) करके जिस जीव-स्त्री को सच्चा गुरु मिलवा देते हो उसका हृदय समस्त प्रकार के भय से रहित होकर अभय पद प्राप्त कर निडर हो जाता है। इस प्रकार वो निर्भयस्वरूप होकर अपने अंत:करण में परमेश्वर के अनुशासन को पूर्णतया बसा लेता है जिसकी बदौलत अहंकार की सारी मैल विनिष्ट हो जाती है। (हृदय की सेज विकारों से रहित होकर उज्जवल-निर्मल हो जाती है, जिस पर प्रभु का सदीवी निवास हो जाता है।) परमेश्वर का गुणगान करने से जीव-स्त्री हृदय-घर में निर्मल संयम बन जाता है, जिसके फलस्वरूप वह हर पल प्रभु प्रियतम को हाज़र-नाज़र देखती है। जर्रे-जर्रे में उसकी विद्यमानता का एहसास जीव-स्त्री को हर पल होने लगता है। उसे पूर्ण विश्वास हो जाता है कि यह जगत रचना उसी की है और वह सर्वत्र समाया हुआ है। उसे अंदर-बाहर सब जगह परमात्मा ही दिखाई देता है, अत: वह सतसंगत में मिलकर परमेश्वर की स्तुति के मंगल गीत गाती रहती है।

श्री गुरु रामदास जी पावन फरमान करते हैं कि दूसरी लाव में अर्थात् उपरोक्त आत्मिक अवस्था पर पहुंची जीव-स्त्री के अंदर अनहद (एक रस) नाद बजने लगता हैं।

हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ

बलि राम जीउ ॥
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥
निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥
संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥
हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥
जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ *(पन्ना ७७३)*

तीसरी लाव में गुरु पातशाह ने जीव-स्त्री के हृदय में उत्पन्न हुए वैराग्य-भाव की गहन अवस्था का ज़िक्र किया है। श्री गुरु रामदास जी के चिंतनानुसार परमेश्वर की कृपा-दृष्टि से ही वैराग्यवान जीव के हृदय में प्रभु-मिलाप का चाव पैदा होता है। यह उच्च आत्मिक अवस्था प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के विवाह हेतु तीसरी सुंदर लाव है।

तीसरी लाव में जीव-स्त्री के मन में वैराग्यपूर्ण चाव (उमंग) पैदा होता है अर्थात्-प्रभु प्रियतम को मिलने की तीव्र इच्छा तथा सांसारिकता से वैराग्य-भाव पैदा होता है। (संत पुरुषों के माध्यम से उपरोक्त वैराग्य-भाव की उत्पत्ति होती है।) फलस्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है और जीव-स्त्री भाग्यशाली बन जाती है। आठों पहर परमेश्वर की स्तुति हृदय-घर में होती रहती है। मुख से प्रभु की निर्मल बाणी का उच्चारण होता रहता है। भाग्यशाली जीव-स्त्री परमेश्वर की अकथनीय कथा का कथन करती है अर्थात् संत-जनों की संगत में प्रभु-मिलाप प्राप्त कर लेती है। हृदय-घर में अनहद धुनि (ध्वनि) बजने लगती है अर्थात् प्रभु-प्रेम के एक रस बाजे बजने लगते हैं। अच्छे भाग्य से परमेश्वर का सिमरन किया जाता है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के विवाह की यह तीसरी लाव है। तीसरी लाव में प्रभु-प्राप्ति की तीव्र इच्छा शिखर पर होती है। इस प्रकार जीव-आत्मा के परमात्मा के साथ विवाह के तीसरे फेरे के रूप में स्त्री के मन में वैराग्यपूर्ण गहन-गंभीर प्रेम उत्पन्न होता है। अंततः यह तीव्र इच्छा ही प्रभु-पति तथा जीव-स्त्री के एक रूप होने का सबब बन जाती है।

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥
मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥ *(पन्ना ७७४)*

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने चौथी तथा अंतिम लाव में जीव की सहज अवस्था तथा प्रभु-प्राप्ति का सुंदर वर्णन किया है कि किस प्रकार जीव-स्त्री मनवांछित फल की प्राप्ति कर आनंद-विभोर हो जाती है।

जीव-स्त्री के परमेश्वर के साथ चौथे फेरे से ही मन में सहज-भाव पैदा होता है। सहज-भाव, सहज अवस्था अर्थात् उच्चात्मिक अवस्था, जिसके फलस्वरूप जीव-स्त्री को प्रभु-पति की प्राप्ति हो जाती है। जिस जीव-स्त्री को गुरमुख बनकर अर्थात् गुरु की शरण में पड़कर परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है उसके मन-तन को प्रभु मीठा लगने लगता है, उसका रोम-रोम पुलकित हो उठता है। जिस जीव-स्त्री को परमेश्वर प्यारा लगने लगता है परमेश्वर को भी वह जीव-स्त्री प्यारी लगने लगती है। वह

जीव-स्त्री सदैव परमेश्वर की याद में अपनी वृत्ति जोड़कर रखती है तथा प्रभु-मिलाप का मनवांछित फल प्राप्त कर लेती है। प्रभु के नाम की बरकत से उसे सदैव उच्च आत्मिक अवस्था की प्राप्ति हुई रहती है।

प्रभु प्रियतम ने जिस जीव-स्त्री के विवाह का शुभ कार्य प्रारम्भ कर दिया वह जीव-स्त्री नाम-सिमरन की बरकत से आनंदित रहती है। प्रभु-पति के साथ जीव-स्त्री के चौथे फेरे से ही जीव-स्त्री सदा-सदा के लिए अविनाशी पति पा लेती है; पति (परमेश्वर) में एक रूप हो जाती है।

महत्ता : सर्वप्रथम गुरबाणी में एक अकाल पुरख परमेश्वर पर अटूट विश्वास रखते हुए अविनाशी प्रभु का श्वास-श्वास सिमरन करने की प्रेरणा दी गई है। साथ ही जीवात्मा-परमात्मा का अंश-अंश सम्बंध बताया गया है। इस जगत में समस्त जीव चाहे वे स्त्री रूप में हैं अथवा पुरुष रूप में, उन्हें स्त्री-रूप में माना गया है, पुरुष केवल और केवल अकाल पुरख को ही माना गया है। गुरबाणी का पावन फरमान है :

इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥ (पन्ना ५९१)

दूसरा महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि लावां संख्या में चार हैं और चारों लावां में अकाल पुरख को साक्षी मानकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा की जाती है। जहां एक ओर नवदंपति के वैवाहिक जीवन का सामाजिक आदर्श है वहीं दूसरी ओर जीवात्मा का परमात्मा के साथ सुखद मिलन का आध्यात्मिक उद्देश्य प्रस्तुत किया गया है।

तीसरा सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य गृहस्थ जीवन की महत्ता का दर्शाया गया है तथा जीव-स्त्री को मायके घर में उन समस्त गुणों, आचरण-व्यवहार से अवगत करवाया गया है जिनकी बदौलत वह ससुराल में, अपने पति के घर में आनंदपूर्वक रह सके। डॉ. जोध सिंघ के चिंतनानुसार, वास्तविक परमार्थिक जीवन में निवृत्ति को छोड़कर सहज प्रवृत्ति मार्ग पर चलने का ढंग पहले समझाया गया है। उसी प्रकार दंपति का विवाह भी गृहस्थ धर्म में प्रवेश लेने का पहला चरण है। आध्यात्मिक जीवन में पहले भय, फिर प्रेम और फिर वैराग्य की बात कही गई है और अंत में सहज अवस्था की प्राप्ति की बात कही गई है। इसी प्रकार पति-पत्नी के जीवन के लिए भय-मिश्रित प्रेम, वैराग्य और सहज जीवन की बात कही गई है। *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब (हिंदी अनुवाद), तीसरी सैंची, परिशिष्ट-I से साभार)*

गुरबाणी में अन्यत्र भी जीव-स्त्री के प्रभु-पति से विवाह के प्रसंग दर्शनीय हैं। भक्त कबीर जी ने भी स्वयं को प्रभु-पति की दुल्हन रूप में प्रस्तुत किया है :

तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥
राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥
गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥
मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥
(पन्ना ४८२)

यही नहीं प्रभु-पति को वश में करने के गुणों का भी ज़िक्र गुरबाणी में दृश्टव्य, है। शेख़ फरीद जी की बाणी के अनुसार :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥
(पन्ना १३८४)

गुरबाणी में जीव-स्त्री को मायके एवं ससुराल, दोनों ही घरों में सुखी बसने की आशीषें प्रदान की गई हैं, यथा :

पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥
गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥ (पन्ना ५०)

इस प्रकार जीवात्मा-परमात्मा के सम्बंधों के अनेक उदाहरण हमें गुरबाणी में मिलते हैं,

लेकिन सम्पूर्ण रूप में ये सम्बंध विवाह संस्कार के रूप में (सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार) श्री गुरु रामदास जी चौथे पातशाह द्वारा उच्चारण बाणी लावां द्वारा ही मान्य हैं, जो अन्य धर्मों के रीति-रिवाज़ों से सर्वथा भिन्न तथा विलक्षण हैं। भले ही आज सिक्ख जगत में पाश्चात्य संस्कृति के रंगों का समावेश दृष्टिगोचर होने लगा है जोकि मर्यादा अनुसार शुभ संकेत नहीं है, फिर भी वास्तविकता यही है कि गृहस्थ धर्म के इस पवित्र एवं नाजुक रिश्ते की संपूर्णता, सामाजिक मान्यता एवं आध्यात्मिक गहनता तभी प्रवीण होगी जब प्रत्येक गुरसिक्ख परिवार अपने बच्चे या बच्ची का अनंद कारज श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन हजूरी में, अकाल पुरख को हाज़र-नाज़र जानते हुए, श्री गुरु रामदास जी के पावन मुखारबिंद से उच्चारण की हुई सूही राग में लावां वाली बाणी से करवाने का अपना परम कर्त्तव्य पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा-भावना से निभाए। तभी हम लोक-परलोक के सच्चे सुखों एवं आनंद के पात्र बन सकेंगे।

कविता

श्री गुरु रामदास जी

भक्ति के हमकिनार[1] थे, गुरु रामदास जी।
रब के करीबी यार थे, गुरु रामदास जी।
अमृत का सर तैयार किया अपने हाथ से,
तहजीब[2] के मेमार[3] थे, गुरु रामदास जी।
दुनिया से बेन्याज़[4] जैसे, कीच[5] में कंवल,
कहने को दुनियादार थे, गुरु रामदास जी।
जादूगरी, करिश्मों के बिलकुल खिलाफ थे,
वहदत[6] का इश्तिहार थे, गुरु रामदास जी।
सिमरन है रब की याद और याद है नशा,
रूहानी इक खुमार थे, गुरु रामदास जी।
जिसमें थे रंग इज्ज[7]-ओ-तहम्मुल[8] व नेक रौ[9],
तसवीर-ए-इंकसार[10] थे, गुरु रामदास जी।
जिसकी महक से महक उठें पत्थरों के दिल,
फूलों का ऐसा हार थे, गुरु रामदास जी।
उनके हर एक लफ्ज़ पर झुकते थे लाखों सर;
दुनिया के शहरयार थे, गुरु रामदास जी।
वहदानियत[11] के तख़्त के मालिक थे आप खुद,
और खुद ही गुरजदार थे, गुरु रामदास जी।
जो आ गया शरण में, गले से लगा लिया,
मज़लूम[12] का हिसार[13] थे, गुरु रामदास जी।
सब जात-पात, धर्म के बंधन को तोड़ कर,
इंसानियत का प्यार थे, गुरु रामदास जी,
रूहानियत[14] से मिट गयी हर तिश्नालब[15] की प्यास,
इक बहता आबशार[16] थे, गुरु रामदास जी।
वो झूठ को समझते थे भगवान से मज़ाक,
सच्चाई पर निसार[17] थे, गुरु रामदास जी।
गुरु अमरदास जी के रूहानी थे जानशीन,
और साहिब-ए-इख़्तयार[18] थे, गुरु रामदास जी।
वो फ़लसफ़ी हयात[19] थे और शायर-ए-अज़ीम[20],
रब के मदहनिगार[21] थे, गुरु रामदास जी।
जिसको भी छू गयी उसे मिल गया सुकून,
चलती हुई ब्यार थे, गुरु रामदास जी।
था मक़सद-ए-हयात भलाई ग़रीब की,
'नानक' के हमकिनार थे, गुरु रामदास जी।
पत्थर को मोम कर दिया लफ़्ज़ों में ढाल कर,
ऐसे ही संगफ़िगार[22] थे, गुरु रामदास जी।
भूखा न कोई सोने दिया 'पंछी' रात में,
लंगर के सेवादार थे, गुरु रामदास जी।

१. हमकिनार=गले मिले हुए, साथी, २. तहजीब=सभ्यता, ३. मेमार=निर्माता, ४. बेन्याज=विरक्त, ५. कीच=कीचड़, ६. हदत=आध्यात्मिकता, ७. इज्ज=नम्रता ८. तहम्मुल=धैर्य, ९.नेक रौ=अच्छी परिपाटी, १०. इंकसार=विनम्रता, ११. वहदानियत=अध्यात्मवाद, १२. मजलूम=जिस पर अत्याचार हो रहा हो, १३. हिसार=रक्षा-कवच, १४. रूहानियत=अध्यात्मवाद, १५. तिश्नालब=प्यासे, १६. आबशार=झरना, १७. निसार=कुर्बान, १८. साहिब-ए-इख्तयार=अधिकारी, १९. फलसफी हयात=दार्शनिक ज़िंदगी, २०. अजीम=महान, २१. मदहनिगार=प्रशंसक, २२. संगफिगार=पत्थर तोड़ने वाला।

-स. करनैल सिंघ 'सरदार पंछी', जेठी नगर, मलेरकोटला रोड, खन्ना (लुधियाना)-१४१४०१; मो : ९४१७०९१६६८

बाबा बुड्ढा जी : जीवन परिचय

*-स. गुरदीप सिंघ**

बाबा बुड्ढा जी श्री गुरु नानक देव जी की शुभ आशीष से सम्पन्न, गुरु-घर के अनन्य सेवक, परोपकारी, ब्रह्मज्ञानी, विद्वान, दूरदर्शी और सिक्ख धर्म का प्रचार व प्रसार करने वाले महान निर्माणकर्ता थे। श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर छेवें पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक पांच गुरु साहिबान को गुरगद्दी पर विराजमान करने की रस्म बाबा बुड्ढा जी सम्पन्न करते रहे। सप्तम पातशाह से दशम पातशाह तक गुरगद्दी पर बिठाने की रस्म बाबा जी के वंशज निभाते रहे।

बाबा बुड्ढा जी का जन्म ७ कार्तिक, सं. १५६३ बि. (सन् १५०६) को गांव गग्गोनंगल शाही किले (मौजूदा कत्थूनंगल), ज़िला श्री अमृतसर में भाई सुग्घा जी (रंधावा) के घर हुआ। आपके पिता २२ गांवों के मालिक थे। आपकी माता गौरां जी बहुत ही भजन-बंदगी करने वाली महिला थीं। माता-पिता ने आपका नाम 'बूड़ा' रखा। १५१९ ई में जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी जब बाबा बुड्ढा जी से मिले तो बाबा बुड्ढा जी पशु चराते हुए प्रेम-भाव से गुरु साहिब की सेवा में दूध लेकर हाज़िर हुए। गुरु जी के दर्शन करते समय बाबा बुड्ढा जी ने विवेक और वैराग्य की बातें की। सतिगुरु जी ने फरमान किया कि चाहे तुम्हारी उम्र छोटी है परंतु समझ (बुद्धि) करके तुम बुड्ढे (वृद्ध, बुजुर्ग) हो, अतः छोटी आयु में ही आपका नाम बाबा बुड्ढा जी प्रसिद्ध हो गया।

बाबा बुड्ढा जी का विवाह १५ फाल्गुन, सं. १५८० बि. दिन रविवार को गांव अचल (बटाला) में (समराह गोत्र की सुपुत्री) बीबी मिरोआ जी के साथ हुआ। आपके चार सुपुत्र-- भाई सुधारी, भाई भिखारी, भाई महिमू और भाई भाना हुए।

श्री गुरु नानक देव जी ने जब गुरिआई श्री गुरु अंगद देव जी को प्रदान की तो गुरिआई देने की रस्म बाबा बुड्ढा जी से करवाई। श्री गुरु अंगद देव जी कई-कई दिनों तक प्रभु-ध्यान में लीन रहते थे। बाबा बुड्ढा जी और माता खीवी जी लंगर का प्रबंध करते; गुरु दर्शन करने के लिए आई हुई संगत की सेवा करते।

गुरु साहिबान की आज्ञानुसार बाबा बुड्ढा जी ने श्री गोइंदवाल साहिब में बाउली खुदवाई, श्री अमृतसर के अमृत सरोवर की खुदाई, उसे पक्का करना तथा श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण के अलावा सरोवर श्री रामसर साहिब, श्री संतोखसर साहिब, श्री बिबेकसर साहिब, श्री कौलसर साहिब, श्री तरनतारन साहिब तथा अन्य स्थानों की सेवा में बहुत योगदान दिया।

श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर की परिक्रमा में एक बेरी है। इस बेरी के नीचे बैठकर बाबा बुड्ढा जी सरोवर व श्री हरिमंदर साहिब की सेवा करवाया करते थे।

श्री गुरु अरजन देव जी ने संवत् १६६१ (१६०४ ई) में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०*

बीड़ तैयार करने के उपरांत उसका प्रकाश करने पर पहला ग्रंथी बाबा बुड्ढा जी को बनाया।

जब बादशाह अकबर श्री गुरु अमरदास जी के दर्शनार्थ आया तो उसने गुरु-घर को कुछ मुहरें एवं ज़मीन प्रदान की। यह ज़मीन गांव ठट्ठा (झबाल के निकट) थी। वहां पर ज़मीन की देखरेख एवं उसे उपजाऊ बनाने के लिए बाबा बुड्ढा जी को भेजा गया। आज वहां का पावन स्थान बीड़ बाबा बुड्ढा जी के नाम से विख्यात है।

छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की गुरिआई की रस्म के समय बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी के कहने पर उन्हें मीरी और पीरी की दो कृपाणें धारण करवाईं।

बाबा बुड्ढा जी का अंतिम समय उनके अपने हाथों बसाए नगर (झंडा) रमदास में बीता। १४ माघ, संवत् १६८८ को आप अकाल चलाना कर गए। श्री गुरु हरिगोबिंद सहिब ने अपने हाथों से बाबा जी का बिबान (चिता) सजाया और सारी अंतिम रस्में की। *(हवाला 'महान कोश', कृत भाई कान्ह सिंघ नाभा)*

बाबा बुड्ढा जी से सम्बंधित स्थान :

गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा बुड्ढा जी गांव कत्थूनंगल, ज़िला श्री अमृतसर में है। ५७८ वर्ष पहले भाई गग्गो के नाम से बसा गग्गोनंगल (मौजूदा कत्थूनंगल) था। यहां एक किला भी था। इसी गांव में बाबा जी ने जन्म लिया।

दूसरा मुख्य स्थान है-- गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब। यह श्री अमृतसर से झबाल-भिक्खीविंड को जाती सड़क पर श्री अमृतसर से १९ किलोमीटर की दूरी पर गांव ठट्ठा में स्थित है। यहां पर श्री गुरु अरजन देव जी के महिल माता गंगा जी मिस्से परशादे आदि लेकर आए और बाबा बुड्ढा जी की सेवा में उपस्थित किए। कहा जाता है कि इसी समय बाबा जी ने माता गंगा जी के घर एक महांबली पुत्र के पैदा होने की बात कही थी।

बाबा बुड्ढा जी से सम्बंधित तीसरा स्थान रमदास है, जो डेरा बाबा नानक से १२ किलोमीटर की दूरी पर और अजनाला से २० किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ छोटा-सा नगर है। यहां पर बाबा बुड्ढा जी के चारों सुपुत्रों ने जन्म लिया था। इसी नगर में बाबा बुड्ढा जी ने अपना अंतिम समय बिताया। मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब प्रमुख सिक्ख-- भाई गुरदास जी, भाई जेठा जी, भाई बिधी चंद जी के साथ बाबा बुड्ढा जी के पास उनके जीवन के अंतिम समय के दौरान पहुंचे थे। गुरु जी ने अपने हाथों से बाबा जी का दाह-संस्कार करने के बाद उनके नमित्त कीर्तन और अंतिम अरदास की थी। इस नगर के आसपास के गांवों में बाबा जी की अंश वाले बस रहे हैं। 



गुरु-घर के निष्ठावान सेवक : बाबा बुड्ढा जी

-डॉ. रछपाल सिंघ*

माननीय बाबा बुड्ढा जी ऐसे परम पुरुष हैं, जो श्री गुरु नानक देव जी की संगत और रंगत करके उनके अनन्य सिक्ख हो गए थे। सिक्ख इतिहास में बाबा बुड्ढा जी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। 'बूड़े' से 'बाबा बुड्ढा जी' बने इस महान शख़्सियत की बात दुनिया से न्यारी है। पांच गुरु साहिबान-- श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरिआई देते समय आवश्यक रस्म निभाने का सम्मान बाबा बुड्ढा जी को मिला। इतना ही नहीं, प्रथम छ: गुरु साहिबान के प्रत्यक्ष दर्शन-दीदार, उनके साथ वचन-विलास करने, उनकी संगत करने तथा उनके साथ रहकर सेवा-सिमरन करने का जो सौभाग्य बाबा बुड्ढा जी को मिला, वो अन्य किसी को नसीब नहीं हो सका। गुरु-हुक्म में नाम-सिमरन की कठोर कमाई करके आप जी ब्रह्मज्ञानी हो गए थे। हर महत्त्वपूर्ण कार्य और सलाह-मशविरे में बाबा जी का सार्थक योगदान होता था। श्री गुरु नानक देव जी ने आपको *"तैथों दूर न होसां"* और श्री गुरु अंगद देव जी ने *"तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ"* की महान बख़्शिश की हुई थी। ऐसे महान एवं उच्च रुतबे के मालिक बाबा बुड्ढा जी का जन्म ७ कार्तिक, संवत् १५६३ को श्री अमृतसर ज़िले के कत्थूनंगल गांव में भाई सुग्घा जी और माता गौरां जी के गृह में हुआ। आपका नाम 'बूड़ा' रखा गया। भाई सुग्घा जी का पूरा परिवार कत्थूनंगल को छोड़कर रमदास नामक गांव में आ गया था। रमदास में ही आप जी की संगत (मिलाप) श्री गुरु नानक देव जी से हुई। उस समय बाबा जी की उम्र लगभग १२ वर्ष की थी। छोटी उम्र के बालक के मुंह से बुजुर्गों (बूढ़ों, बुड्ढों) जैसी ज्ञान की बातें सुनकर गुरु जी ने आप जी को 'बूड़ा' से 'बुड्ढा' नाम प्रदान किया। आप जी की धर्म-पत्नी का नाम बीबी मिरोआ जी था। आप जी के घर चार पुत्र पैदा हुए, जो सारी उम्र गुरु-घर के सेवक रहे।

बाबा बुड्ढा जी बहुत बड़े जमींदार घराने से संबंध रखते थे। आप जी के पूर्वज दो दर्जन गांव के मालिक थे। जमींदार घराने वाले और जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी की संगत एवं रंगत के मालिक बाबा बुड्ढा जी का पूरे इलाके में खासा मान-सम्मान था। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय तक गुरु-घर के सारे महत्त्वपूर्ण कार्य बाबा बुड्ढा जी के योग्य मशविरे से ही होते थे। श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि के प्रचार-प्रसार और गुरमति उपदेश की महान सेवा बाबा बुड्ढा जी से ली। श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गोइंदवाल नगर बसाने तथा बाउली (बावली) की खुदाई-निर्माण आदि के समय बाबा जी की सेवाएं प्रमुख रूप से लीं। श्री अमृतसर

(शेष पृष्ठ २१ पर)

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

कविता

ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी

-श्री सुरजीत दुखी*

गुरु नानक ने देख सियानप, चांद एक चमका डाला।
'बूड़े' नाम के बालक को, बचपन में ही 'बुड्ढा' बना डाला।
किरत करनी, वंड छकना और नाम जपना सिखा डाला।
हर तरह से योग्य समझ, गुरु-घर का सेवक बना डाला।
गृहस्थ धर्म की शिक्षा देकर, जिम्मेदार बनाया था।
चार पुत्रों ने जन्म ले, परिवार उनका बढ़ाया था।
ब्रह्मज्ञान में लीन हो बाबा ने, गुरु-वचन कमाया था।
गुरगद्दी-रस्म निभाने का, अधिकार तभी तो पाया था।
भाई लहिणा देवी-दर्शन करने, रावी पार जब आया था।
बाबा बुड्ढा जी ने उनको, गुरु नानक से मिलवाया था।
परीक्षा में 'लहिणा' सफल हुए, उत्तराधिकारी बनवाया था।
गुरु 'अंगद' उनको नाम दिया, फिर बाबे ने फर्ज़ निभाया था।
बीबी अमरो ने बाबा अमरदास को, खडूर साहिब पहुंचाया था।
नज़रें मिलीं जब गुरु अंगद से, मन में चैन-सुख पाया था।
सेवा, सिमरन, आत्म-रस में, जीवन अपना लगाया था।
बाबा बुड्ढा ने गुरु-आदेश से, उन्हें गुरगद्दी पर बिठाया था।
गुरु नानक की याद अमर करने का, सुझाव जब आया था।
बाबा लखमी चंद, बाबा श्रीचंद ने, बाबा बुड्ढा को बुलवाया था।
नींव धरी डेरा बाबा नानक की, रावी किनारे बसाया था।
नगर बसाने में बाबा जी ने, बहुत-सा हिस्सा पाया था।
गोइंदवाल में अहंकारी दातू ने, गुरु जी से वैर कमाया था।
नम्रता से गुरु अमरदास ने, उसी रात गोइंदवाल छोड़ दिया,
बाबा बुड्ढा ने सेंध लगा संगत को, गुरु का दर्शन कराया था।
इस तरह सन्न साहिब गुरुद्वारे का, इतिहास होंद में आया था।
अंतिम समय जान गुरु जी ने, संगत को बात यह बतलाई।
बुलाया बाबा बुड्ढा जी को, अब जाने की बारी आई।
थापिआ चौथा गुरु, गुरु रामदास को और बाबा जी को आदेश किया,
पाकर आदेश बाबा जी ने, गुरगद्दी की रस्म निभाई।
गुरु रामदास ने योजना बना, गुरु अमरदास के कहने पर,

*३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर-१४३००१, मो: ९९१४५३१२२१

श्री अमृतसर शहर बसा, इसे व्यापारिक केंद्र बनाया था।
संतोख सर और अमृत सर की निशानदेही कर, दो महान सरोवरों का टक्क लगाया था।
गुरु रामदास के ज्योति-जोत समाने की, घड़ी जब आई थी।
बाबा जी ने गुरु-आज्ञा मानने की, रीति फिर निभाई थी।
गुरु-आदेश से अगला गुरु थापा गुरु अरजन को, अब पांचवें गुरु को गुरगद्दी पर बैठाने की बारी आई थी।
आदेश जो माना गुरु अरजन का, हरिमंदर योजना रंग लाई।
साईं मियां मीर प्रभु-भक्त से, नींव उनसे इसकी डलवाई।
संतोखसर और तरनतारन गुरुद्वारों का निर्माण कराया।
पानी की कमी पूरी करने के आदेश को भी जामा पहनाया।
आज्ञा मानकर गुरु अरजन की, गुरु हरिगोबिंद साहिब को पढ़ाया था।
पंजाबी लिपि के साथ-साथ, सृष्टि का ज्ञान समझाया था।
गुरु अरजन गए लाहौर जब, मुगलों ने ज़ुल्म कमाया था।
मीरी-पीरी की दे कृपाणें, गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी पर बिठाया था।
हुक्म हुआ जब निरंकार का, अंतिम समय तब आया था।
१२५ वर्ष, एक महीना और चार दिन का जीवन पाया था।
गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने हाथों से, सुंदर बबान सजाया था।
जो स्थान समाधां रमदास है 'दुखी', वहां अंतिम संस्कार कराया था।



गुरु-घर के निष्ठावान सेवक : बाबा बुड्ढा जी

(पृष्ठ १९ का शेष)

में अमृत सरोवर की खुदाई के अलावा श्री अमृतसर साहिब के निर्माण एवं अन्य समूचे कार्यों की निगरानी की महान सेवा भी बाबा जी ने की। सेवा-कार्यों के साथ-साथ आप जी का श्वास-श्वास नाम-सिमरन में रंगा हुआ रहता था।

श्री गुरु अरजन देव जी ने आपको श्री हरिमंदर साहिब का पहला ग्रंथी नियुक्त किया। श्री गुरु अरजन देव जी के हुक्म से बाबा जी कुछ समय आवश्यक कामों के कारण बीड़ साहिब (गांव ठट्ठा) भी गए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की गुरिआई की रस्म निभाते समय बाबा जी ने गुरु जी को मीरी और पीरी की दो कृपाणें पहनाईं। फिर छठम गुरु जी से आज्ञा लेकर आप जी रमदास में आ गए। उस समय आप जी की आयु लगभग १२५ वर्ष की हो चुकी थी। शरीर बहुत ही कमज़ोर हो चुका था। बाबा बुड्ढा जी के अकाल चलाना करने के समय श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब विशेष रूप से रमदास पहुंचे। गुरु जी ने अपने पावन कर-कमलों से बाबा जी की देह का अंतिम संस्कार किया। बाबा बुड्ढा जी सारी उम्र गुरु-घर के अदने सेवक की तरह रहे। वे अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, चुगली आदि अवगुणों से निर्लेप थे।

विनम्रता की मूरत : नवाब कपूर सिंह

*-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'**

बाबा बंदा सिंह बहादर की शहादत के बाद सन् १७२० से लेकर १७६५ ई. तक का समय सिक्खों के लिए ज़बरदस्त संघर्ष का समय था। इस काल में उन्हें न सिर्फ़ स्थानीय मुगल साम्राज्य के सूबेदारों से जंग लड़नी पड़ी, बल्कि नादिर शाह (१७३९ ई.) और अहमदशाह अब्दाली (१७४७-१७६७ ई.) जैसे विदेशी आक्रमणकारियों से भी संघर्ष करना पड़ा। ऐसे कष्टदायक हालात में सिक्खों की बागडोर नवाब कपूर सिंह के हाथों में रही। नवाब कपूर सिंह ने निहायत विपरीत परिस्थितियों में सन् १७३३ ई. से लेकर सन् १७५३ ई. तक सिक्खों का नेतृत्व संभाला।

गुरु-घर में समर्पित परिवार में जन्म : सरदार कपूर सिंह का जन्म १६९७ ई. में फैज़लपुर नामक गांव में हुआ। आपके पिता सरदार साधू सिंह गुरु-घर के अनन्य श्रद्धालु थे। आपको बचपन से ही गुरमति-प्रेरित वातावरण मिला। किशोरावस्था में पहुंचते ही आप ने भाई मनी सिंह जी के जत्थे से अमृत छका और 'सिंघ' सज गए। यही नहीं, बहुत छोटी-सी उम्र में ही आपने स्वयं को गुरु-कार्य के लिए समर्पित कर दिया और जत्थेदार सरदार दरबारा सिंह के जत्थे में शामिल हो गए।

विनम्र सेवक : सरदार कपूर सिंह का व्यक्तित्व विनम्रता और संवेदनशीलता से ओत-प्रोत था। आप हर समय सेवा-कार्य में ही लगे रहते। पंखा झलना, लंगर की सेवा, घोड़ों की देखभाल आदि कितने ही ऐसे कार्य थे जिनमें आप सारा-सारा दिन रमे रहते।

सरदार कपूर सिंह को नवाबी मिलना : सरदार कपूर सिंह के नवाब कपूर सिंह बनने की कथा भी बड़ी रोचक है। बाबा बंदा सिंह बहादर की शहादत के बाद सिक्खों के कत्लेआम का हुक्म दे दिया गया था। १७२६ ई. में जब ज़करिया ख़ान लाहौर का सूबेदार बना तो इन अत्याचारों में और तेजी आ गई। सिक्ख घर-गांव छोड़कर जंगलों में जा छिपे और जत्थे बनाकर छापामार युद्ध करने लगे।

यह दमन-चक्र सन् १७३३ ई. तक ज़ारी रहा। सिक्ख का सिर काटकर लाने वाले को अस्सी अशरफियां इनाम में दी जाती थीं। इतने पर भी जब ज़करिया ख़ान को सिक्खों के विरुद्ध कोई विशेष कामयाबी न मिली तो उसने चालाकी की नीति अपनाने का निश्चय किया। ज़करिया ख़ान ने सरकारी ठेकेदारी का काम करने वाले सरदार सुबेग सिंघ के हाथ एक जागीर सिक्खों के तत्कालीन जत्थेदार दीवान दरबारा सिंघ को भेजी। सरदार दरबारा सिंघ ज़करिया ख़ान की ललचाने की चाल को समझते थे। उन्होंने जागीर लेने से साफ इंकार कर दिया।

सरदार सुबेग सिंघ और कुछ प्रमुख सिक्ख योद्धाओं के आग्रह पर सरदार दरबारा सिंघ अंततः जागीर लेने की सहमति के साथ शर्त यह रखी कि इसे किसी सेवादार को सौंपा जाए, वे

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

स्वयं जागीर स्वीकार नहीं करेंगे।

सरदार कपूर सिंघ उस समय संगत को पंखा झल रहे थे। जत्थेदार साहिबान ने उन्हें जागीर प्राप्त करने का आग्रह किया तो विनम्रता की मूरत सरदार कपूर सिंघ ने इसे पंथ का आदेश समझकर शिरोधार्य कर लिया। उन्होंने पांच सिंघों की उपस्थिति में जागीर स्वीकार कर ली। इस तरह सरदार कपूर सिंघ नवाब बन गए।

इस जागीर की आमदनी एक लाख रुपए सालाना थी। यह सारी की सारी रकम लंगर में ख़र्च कर दी जाती थी।

जब इस लालच से भी ज़करिया खान सिक्खों को न झुका सका तो उसने १७३५ ई. में यह जागीर ज़ब्त कर ली, परंतु सरदार कपूर सिंघ सिक्ख इतिहास में हमेशा के लिए 'नवाब' बन गए।

सिक्खों का नेतृत्व : सन् १७३५ ई में ही जत्थेदार दरबारा सिंघ अकाल चलाना कर गए और सिक्खों का नेतृत्व ख़ासकर बुड्ढा दल की सारी ज़िम्मेदारी नवाब कपूर सिंघ के कंधों पर आ गई। आपने नादिर शाह के हमले, ज़करिया खान और मीर मन्नू के दमन-चक्रों तथा अहमदशाह अब्दाली के साथ संघर्ष के समय सिक्खों का कुशल नेतृत्व किया।

छोटा घल्लूघारा : नंवाब कपूर सिंघ के नेतृत्व-काल में घटी सबसे बड़ी घटना थी--'छोटा घल्लूघारा।' 'घल्लूघारे' का अर्थ होता है--'कत्लेआम।' यह कत्लेआम मई-जून, सन् १७४६ ई. में हुआ था।

हुआ यूं कि एमनाबाद में सिक्खों के एक जत्थे के साथ झड़प में लाहौर के दीवान लखपत राय का छोटा भाई जसपत राय मारा गया। दीवान लखपत राय भाई की मौत के कारण गुस्से से पागल हो उठा। उसने लाहौर के सूबेदार से मिलकर एक लाख का लश्कर तैयार करवाया। इस लश्कर को सिक्खों के कत्लेआम का हुक्म दे दिया गया।

सिक्ख आत्म-रक्षा के लिए गुरदासपुर ज़िले के गांव काहनूंवान के समीपवर्ती दलदली जंगल में आ गए। मुगल लश्कर ने जंगल को घेर लिया और जंगल काट-काटकर आगे बढ़ना शुरू कर दिया। सिक्खों को विश्वास था कि मुगल सेना जंगल में नहीं घुसेगी, परंतु जब मुगल सेना जंगल काटकर आगे बढ़ी तो सिक्ख घेरे में आ गए। दो ओर पहाड़, एक ओर रावी दरिया और एक ओर मुगल लश्कर . . ।

ऐसे में नवाब कपूर सिंघ ने एक अत्यंत दिलेराना फैसला लिया। आपने मशविरा दिया कि तेजी से जंग करते हुए लश्कर को चीरकर निकलने का प्रयास किया जाए। आपकी राय के अनुसार सिंघों ने लश्कर पर ज़बरदस्त धावा बोल दिया। घमासान युद्ध में मुगल लश्कर तितर-बितर हो गया। भारी जानी नुकसान के बावजूद सिक्ख बचकर निकलने में कामयाब हो गए।

मुगल लश्कर ने सिक्खों का पीछा किया। मई-जून की भयंकर गर्मी और उस पर भूखे-प्यासे घायल सिक्ख, फिर भी वे मुगल लश्कर पर भारी पड़े और उसके हाथ नहीं आए। सिक्खों ने सतलुज पार किया और बरनाला जा पहुंचे। वहां पटियाला रियासत के संस्थापक बाबा आला सिंघ ने सिक्खों की सहायता की। थका-हारा एवं तबाह मुगल लश्कर सतलुज से ही लौट गया।

छोटे घल्लूघारे की इस घटना में लगभग आठ हज़ार सिक्ख शहीद हो गए, परंतु नवाब कपूर सिंघ के बहादुरी भरे फैसले ने सिक्खों का

और बड़ा जानी नुकसान होने से बचा लिया।

सिक्खों में शक्ति का पुनर्संचार : छोटे घल्लूघारे के बाद का समय सिक्खों के लिए बहुत ही कठिन समय था। ऐसे में नवाब कपूर सिंघ ने सिक्खों को संभाला और उनमें ऐसी शक्ति भर दी कि वे महज तीन वर्षों में ही अहमदशाह अब्दाली के साथ छापामार युद्ध करने लगे।

१७४९ ई से लेकर १७५३ ई तक सिक्खों ने मुगलों एवं अहमदशाह के विरुद्ध अनेक युद्ध लड़े और कई बार दुश्मन के दांत खट्टे किए। अहमदशाह अब्दाली सिक्खों की चतुरता और चपलता से सदा हैरान रहता था। सिर्फ मुट्ठी भर सिक्ख घोड़ों पर सवार जंगलों में से अचानक प्रकट होते और लश्कर पर टूट पड़ते तथा तबाही मचाते हुए भारत के धन-धान्य और कै़दी भारतीय स्त्री-पुरुषों को छुड़ा ले जाते। अब्दाली का लाखों का लश्कर हक्का-बक्का देखता रह जाता।

नवाब कपूर सिंघ का अकाल चलाना : अनेक युद्धों में सिक्खों का नेतृत्व करने वाले श्रेष्ठ नायक एवं योद्धा नवाब कपूर सिंघ फैज़लपुरिया सन् १७५३ ई में सिक्खों का नेतृत्व जत्थेदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सौंपकर अकाल चलाना कर गए। नवाब कपूर सिंघ का अंतिम संस्कार श्री अमृतसर साहिब में बाबा अटल राय गुरुद्वारा साहिब के समीप किया गया।



कविताएं

हमें अब बख़्श ले!

हमें अब बख़्श ले, परम पिता जी बख़्श ले!
अमृत के दाते बख़्श ले, मेरे पुरख विधाते बख़्श ले!
अपर अपार जी बख़्श ले, मेरे पिता दातार जी बख़्श ले!
मेरे आधारां-आधार बख़्श ले, मेरे बख़्शनहार बख़्श ले।
मुझ भूले को साथ लगाया, मुझ भटके को राह दिखाया,
गलतियों की दे-दे माफी, बख़्शना सरशार बख़्श ले!
हम गलतियों के हैं पुतले, जीवन जाता सोते-सोते,
राह दिखाकर कृपा करना, हम अपराधियों को बख़्श ले!
आप निथावों के थान हो, आप निमानों के मान हो,।
आप नितानों के तान हो, आप कृपालु बख़्श ले!
मेरे महा महान बख़्श ले, कृपा निधान बख़्श ले!
चढ़त सुजान बख़्श ले, पुरख प्रधान बख़्श ले!
बख़्श ले, हमें बख़्श ले, प्रभु हमें अब बख़्श ले!

गुरुदेव जी का पावन फलसफा

गुरुदेव जी का पावन फलसफा।
कर्म-किरत का है यह सिलसिला।
गुरु-जन चाहते हैं धर्म कमाना।
किरत-विरत की राह अपनाना।
फल देती है हमको यह धरती।
जब मानस देही कर्म है करती।
बहे पसीना किरत-कर्म कमाते।
ऐसे तन-मन पावन हो जाते।
परिवारों में भी आती खुशहाली।
किरत-कर्म की राह है निराली।
हलाल की रोटी अच्छी लगती।
किरत-विरत ऐसे है फलती।
गुरुदेव जी का पावन फलसफा।
कर्म-किरत का है यह सिलसिला।



-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

श्री पंजा साहिब का शहीदी साका

– *सिमरजीत सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी प्रचार यात्राओं के दौरान सिक्खी का प्रचार करते-करते हसन अबदाल (अब पाकिस्तान) की धरती को भाग्यशाली बनाया। यहां जिस जगह पर श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई मरदाना जी ने मुसलिम फकीर वली कंधारी का अहंकार चूर किया था, वहां गुरु जी की आमद की याद में गुरुद्वारा पंजा साहिब सुशोभित है।

महाराजा रणजीत सिंघ को अपना राज्य-भाग कायम करने के लिए बहुत समय जंगों-युद्धों में से गुज़रना पड़ा। जब उनको शांति से राज्य करने का मौका मिला तो उन्होंने गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल की ओर विशेष ध्यान दिया। गुरुद्वारा साहिबान में लंगर एवं प्रबंध में कोई मुश्किल न आए, इसलिए गुरुद्वारा साहिबान के नाम पर जागीरें एवं ज़मीनें लगाई गईं। सिक्ख जरनैल स. हरी सिंघ नलूआ ने गुरु जी की याद में सुशोभित गुरुद्वारा पंजा साहिब की शानदार इमारत का निर्माण करवाया तथा इसके नाम बहुत सारी जागीर लगवाई।

सन् १८३९ ई में महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल चलाना करने के उपरांत पंजाब में राज्यगद्दी की प्राप्ति के लिए अंधेरगर्दी मच गई। कत्लोगारत शुरू हो गई। इन हालातों के बारे में उस समय का प्रसिद्ध कवि शाह मुहम्मद अपनी आखों देखा हाल इस प्रकार लिखता है :

जेहड़ा बहे गद्दी उहनूं मार लैंदे,
नहीं छड्डिआ साध ते संत मीआं।

इन हालातों में गुरुद्वारा साहिब के प्रबंधक/महंत जो गुरुद्वारा साहिब की मलकियत ज़मीनों की देखभाल के लिए रखे गए थे, वे इनको अपनी व्यक्तिगत जागीरें समझने लग पड़े। ज़मीनों की भारी आमदनी ने इनको भोगी-विलासी बना दिया। पंजाब में अंग्रेजों का राज्य होने के उपरांत अंग्रेजों ने भी मुगल हाकिमों की तरह गुरुद्वारा साहिबान को सिक्ख शक्ति का सोमा मानकर दख़्लांदाज़ी शुरू कर दी। गुरुद्वारा साहिब के प्रबंधक महंत के पिट्ठू बन गए। अंग्रेजों की शह पर महंतों ने अंधेरगर्दी शुरू कर दी तथा १९०६ ई में गुरुद्वारा साहिब की जागीर अपने नाम लगवा ली।

महंतों का लालच दिन-ब-दिन बढ़ता गया। वे गुरुद्वारा साहिबान के दर्शनों के लिए आने वाली संगत के साथ बुरा व्यवहार करने लगे। गुरुद्वारा साहिब के परिसर में होती इनकी मनमानियों को देखकर संगत का मन बहुत दुखी होता। अगर कोई इन लोगों को समझाने की कोशिश करता तो महंत किराए के गुंडों से उनकी मार-पीट करवाते। महंतों की इन नित्य-प्रति घटनायों से सूझवान सिक्ख बहुत दुखी हुए। उन्होंने इनको सबक सिखाने के लिए तथा गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध पंथक हाथों में लेने के लिए ठानी। उन्होंने जगह-जगह जाकर सिक्खों को जागृत करना शुरू किया। गुरुद्वारा पंजा साहिब के महंत के विरुद्ध भी वर्षो तक विद्रोह चलता रहा। ऐबटाबाद की संगत ने जब

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

महंत मिट्ठा सिंघ से हिसाब मांगा तो महंत ने उनको कोई संतुष्टिपूर्ण जवाब न दिया। १९१५ ई. में 'पंथ सेवक' अख़बार ने गुरुद्वारा पंजा साहिब की जायदाद के बारे में सारे दस्तावेज़ प्रकाशित करके महंत का भंडा फोड़ दिया कि उसने धोखे से गुरुद्वारा साहिब की सारी ज़मीन अपने नाम पर लगवा ली है। महंत मिट्ठा सिंघ की मौत के बाद १८ नवंबर, १९२० ई. को भाई करतार सिंघ झब्बर की अगुवाही में २५ सिंघों का जत्था पंजा साहिब पहुंचा। कुछ तकरार के बाद महंत के पारिवारिक सदस्यों ने मुआफी मांगकर गुरुद्वारा साहिब का सारा प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंप दिया। भाई प्रताप सिंघ जी को गुरुद्वारा पंजा साहिब में सेक्रेट्री मैनेजर तथा खज़ानची नियुक्त करके सेवा-संभाल की जिम्मेवारी सौंप दी गयी।

समूह गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध में सुधार करने के लिए एक दीवान गांव धारोवाली में भी किया गया। इस कार्य के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ३० अप्रैल, १९२१ को रजिस्टर्ड करवाई गयी। नियम बनाकर जुलाई, १९२१ ई. में इसका चुनाव किया गया। इस नयी कमेटी के चुने हुए सदस्यों का पांचवा हिस्सा १४ अगस्त को नामज़द किया गया तथा नयी कमेटी की एकत्रता २७ अगस्त, १९२१ ई को हुई। इस कमेटी ने बड़े उत्साह के साथ गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध को सुधारने का काम आरंभ कर दिया। काफी संघर्ष के बाद श्री दरबार साहिब तरनतारन का प्रबंध भ्रष्ट महंतों से अपने हाथों में ले लिया। इस संघर्ष में भाई हज़ारा सिंघ जी शहीदी पा गए थे। इस घटना का पता चलने पर संगत दूर-दूर से आ रही थी। इस समय घुक्केवाली गांव के पास के सिंघ जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर के पास पहुंचे। इन्होंने गांव घुक्केवाली के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान गुरु का बाग पर काबिज़ महंत सुंदर दास की करतूतें बताकर बुरे प्रबंध के बारे में चिंता प्रकट की। महंत को समझाने के लिए जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर की अगुवाही में ५० सिंघों का जत्था घुक्केवाली में पहुंचा तो महंत ने उनसे माफी मांगकर आगे से गुर-मर्यादा में रहकर प्रबंध करने का इकरारनामा लिख दिया। कुछ समय तो महंत ठीक रहा परंतु फिर से अपनी पुरानी करतूतों पर आ गया।

८-९ अगस्त, १९२२ ई. को संगत के कुछ सिंघ लंगर के लिए बाग में से लकड़ियां लेने के लिए गए। महंत ने पुलिस के साथ मिलकर इन सिंघों का चलान करवा दिया कि यह मेरी निजी जायदाद में से लकड़ियां काटने आए हैं। इसके साथ ही गुरु का बाग का मोर्चा शुरू हो गया। हर रोज़ १०० सिंघों का जत्था शांतमयी ढंग से रोष-प्रदर्शन करता हुआ गुरु का बाग की तरफ जाता और पुलिस उनको घोर यातनायें देती। श्री अमृतसर पुलिस के डिप्टी सुप्रिंटेंडेंट मिस्टर बी. टी. ने इन पर कुत्ते छोड़ दिए और लाठियों से मार-पीट करता हुआ घोड़ों के सुम्मों तले रौंदता। अनेकों सिंघ गंभीर रूप में ज़ख्मी हो गए।

गुरु के बाग के मोर्चे में फौजी पेंशनियों का एक जत्था भी रोष-मुज़ारहा करने के लिए पहुंचा। इस जत्थे का मुखिया सूबेदार अमर सिंघ रियासत कपूरथला के गांव धालीवाल का था, उप जत्थेदार मास्टर चतर सिंघ हवलदार पलटन नं: १९ थे। यह जत्था अपनी शानो-शौकत से मार्च करता हुआ गुरु के बाग की तरफ रवाना हुआ। इस जत्थे के सिंघों के गले में हार तथा एक जैसी वर्दियां और एक जैसी दसतारें थीं।

इनको गिरफ्तार करके अमृतसर के मैजिस्ट्रेट नवाब असलम हयात ख़ान की कचहरी में पेश किया गया। नवाब ने इनमें से २६ लोगों को ६-६ महीने बिना मुशक्कत कैद और १००-१०० रुपए जुर्माना, अन्य ७४ सिंघों को अठाईस-अठाईस साल की कैद-बा-मुशक्कत तथा १००-१०० रुपए जुर्माने की सज़ा दे दी। अपने एक सांझे बयान में इन फौजियों ने कहा कि वह दूर-दराज़ जगह पर परदेशों में जाकर घोर संकटकालीन हालातों में बहुत सारी मुसीबतों को झेलते हुए अंग्रेज सरकार की लड़ाइयां लड़ते रहे हैं। उनमें से लगभग प्रत्येक को बहादुरी के बदले मैडल मिला हुआ था। अगर सरकार उनके धर्म में दख़लंदजी कर रही है तो यह उनके साथ गैर मानवीय वरतारा था, इसलिए ये अपने गुरुद्वारा साहिबान की रक्षा हेतु जेल जाते हुए फख्र महसूस कर रहे थे।

२९ अक्तूबर, १९२२ को इन फौजी पेंशनियों के जत्थे को श्री अमृतसर से रेलगाड़ी द्वारा अटक व कैमलपुर की जेलों में भेजा गया। जब यह गाड़ी गुज्जरांवाला पहुंची तो वहां की संगत को किसी तरह गाड़ी के आने की इत्तला मिल गयी। गुज्जरांवाला स्टेशन पर भाई अमरीक सिंघ, डॉक्टर महां सिंघ, वकील नराइण सिंघ, मास्टर छहबर सिंघ, भारी संख्या में संगत लेकर जत्थे के स्वागत के लिए पहुंच गए। फल, मिठाई और अन्य वस्तुएं भेंट की गयीं।

जिस गाड़ी में फौजी सिंघों का जत्था जा रहा था वह स्पेशल थी। यह गाड़ी ३० अक्तूबर दोपहर के समय रावलपिंडी पहुंच गयी। इसके आगे रास्ते में गुरुद्वारा पंजा साहिब आता है। गुज्जरांवाला से ही इसकी ख़बर श्री पंजा साहिब पहुंच चुकी थी। वहां पर संगत ने गाड़ी रोककर कैदी भाइयों की सेवा करने की योजना बनायी। संगत की ओर से बनायी योजना के अनुसार मोर्चों में शामिल कैदी भाइयों के लिए लंगर तैयार करके रेलवे स्टेशन पर लाया गया। इस मौके ३०० के लगभग संगत रेलवे स्टेशन पर इकट्ठी हो गयी थी।

स्टेशन मास्टर के बताने पर पता चला कि सरकार की तरफ से सख़्त हुक्म है, इस लिए गाड़ी यहां नहीं रुकेगी। सीधा अटक नामक स्थान पर जाएगी। यह सुनकर श्री पंजा साहिब की संगत को बहुत निराशा हुई। उस वक्त भाई प्रताप सिंघ जी तथा भाई करम सिंघ ने संगत को कहा, "गाड़ी जरूर खड़ी होगी। हम अपने भाइयों को प्रशादा छकाकर ही आगे जाने देंगे।" दोनों ने जान देकर भाइयों की सेवा करने के लिए मन बना लिया। प्रतिज्ञा बड़ी कठिन थी। उन्होंने गुरु परमेश्वर के चरणों में अरदास की कि वो उनकी प्रतिज्ञा को संपूर्ण करें।

रावलपिंडी से चली गाड़ी श्री पंजा साहिब के समीप पहुंच चुकी थी। स्टेशन मास्टर ने लाइन क्लीयर का संकेत दिया हुआ था। गाड़ी के रुकने की आशा नहीं थी। यह देखकर भाई प्रताप सिंघ जी एवं भाई करम सिंघ जी दोनों रेलवे लाइन पर लेट गए। और भी बहुत-सी संगत रेलवे लाइन के बीच बैठ गयी। गाड़ी के ड्राइवर ने रेलवे लाइन पर लेटे हुए सिंघों को देखकर बहुत विसिल दिए, परंतु किसी ने भी परवाह नहीं की। वे मृत्यु से निर्भय तथा देह अध्यास से ऊंचे उठ चुके थे। वे *"मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु"* की अवस्था को प्राप्त कर चुके थे।

विक्टर ह्यूगो का कथन है : "ज़िंदगी चाहे कितनी शानदार क्यों ना हो, परंतु तवारीखी फैसले के लिए सदैव मृत्यु का इंतज़ार करती है।"

भाई प्रताप सिंघ जी तथा भाई करम सिंघ जी ने शहीदी प्राप्त करने का तवारीखी फैसला कर लिया था। रेलगाड़ी तेजी से आ रही थी। रेलगाड़ी का इंजन दोनों सिंघों भाई प्रताप सिंघ जी व भाई करम सिंघ जी की हड्डियों को चूर करता हुआ ऊपर से गुज़र गया। दोनों के शरीर पिंजे गए। बहुत सारे सिंघ जख़्मी हो गए। ६ सिंघों की टांगें व बाजुएं कट गयीं परंतु जानें बच गयीं। गाड़ी रुक गयी। रेलवे लाइन के दोनों किनारों पर संगत इस दर्दनाक दृश्य को देखकर त्राह-त्राह कर रही थी। जब दोनों सिंघों को इंजन के पहियों से निकालने की कोशिश की गयी तो भाई प्रताप सिंघ जी ने कहा कि पहले गाड़ी में सवार गुरसिक्खों को प्रशादा छका लो फिर हमें निकालना। अगर हमें पहले गाड़ी के नीचे से निकाल लिया तो ड्राइवर गाड़ी भगा कर ले जाएगा। गाड़ी में जा रहे कैदियों को प्रशादा छकाने के बाद भाई प्रताप सिंघ जी व भाई करम सिंघ जी को गाड़ी के नीचे से निकाला गया। वे सिसकियां भर रहे थे। डिप्टी कमिश्नर को इसकी इत्तला मिली। वह मौके पर पहुंच गया। संगत ने जख़्मी हुए सिंघों को हसन अबदाल के अस्पताल में भर्ती करवाया। भाई प्रताप सिंघ जी व भाई करम सिंघ जी को जख़्मी हालत में गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में लाया गया। जहां वे पांच भूतक शरीर त्यागकर आत्मिक तौर पर गुरु-चरणों में जा विराजे। इन दोनों शहीदों का प्रेमपूर्वक व सत्कार सहित अंतिम संस्कार रावलपिंडी में नदी के किनारे पर किया गया। देश विभाजन से पूर्व गुरुद्वारा पंजा साहिब में इन शहीदों की याद में वार्षिक समागम भी किए जाते थे।

इस साके में जख़्मी हुए पांच सिंघों पर पुलिस ने रेलवे एक्ट की धारा १२८ के अधीन केस दर्ज करके गिरफ्तार कर लिया। अदालत ने चौधरी लाल चंद रोहतक के खिलाफ मुकद्दमे का फैसला सुनाते हुए एक हज़ार रुपए की सदाचारक चरित्र की ज़मानत पर रिहायी का हुक्म दिया, परंतु उसने ज़मानत लेने से इन्कार कर दिया तथा एक वर्ष की बा-मुशक्कत कैद काटी।

शहीद प्रताप सिंघ जी का जन्म २१ सितंबर, १८९८ ई को ज़िला गुज्जरांवाला के शहर अकालगढ़ में गुरसिक्ख परिवार में पिता स. सरूप सिंघ तथा माता प्रेम कौर के घर हुआ था। दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप अपने भाई के पास शिमले आर्मी हेड-क्वार्टर में चले गए और वहीं नौकरी करने लग गए। १९ वर्ष की आयु में आपकी शादी बीबी हरनाम कौर के साथ हुई। इनके घर एक लड़के ने जन्म लिया। अकाली लहर के प्रभावाधीन आप कार्यालय में काली पगड़ी बांधकर चले गए। अंग्रेज अफसर ने कार्यालय में आपको काली पगड़ी बांधकर आने से रोक दिया तो भाई साहिब की उसके साथ बहस हो गयी। भाई साहिब ने काली पगड़ी नहीं उतारी बल्कि नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। भाई साहिब ने त्याग पत्र देने के उपरांत सबसे पहले जलियां वाला बाग में हिस्सा लिया और फिर गुरुद्वारा पंजा साहिब को महंतों से आज़ाद करवाने के लिए संघर्ष में गए। आपने अपने कपड़े जलाकर सदा के लिए खद्दर का चोला धारण कर लिया। १ जनवरी, १९२२ ई को जब उनका पुत्र उबलते पानी से जलकर मर गया तो आप ने इस घटना को अकाल पुरख की रज़ा मानकर किसी को रोने-कुरलाने नहीं दिया। पंजा साहिब से कैदी सिंघों को लेकर जा रही रेलगाड़ी को रोकने के लिए आप ने शहीदी

प्राप्त की। आप जी की शहीदी से कुछ महीने बाद आप जी के घर पुत्री जोगिंदर कौर का जन्म हुआ।

भाई करम सिंघ जी का जन्म श्री अनंदपुर साहिब के महंत भाई भगवान सिंघ तथा माता रूप कौर के घर १४ नवंबर, १८८५ ई को हुआ। आप चार भाइयों में से सबसे छोटे थे। आप जी का पहला नाम स. संत सिंघ था परंतु जब आपने श्री हजूर साहिब जाकर खंडे की पाहुल प्राप्त की तो नाम स. करम सिंघ रख लिया। आप जी के पिता भाई भगवान सिंघ उच्च कोटि के विद्वान थे जिनको महाराजा पटियाला ने गुरमति प्रचार के लिए अपने पास बुला लिया। स. करम सिंघ जी अपने पिता जी से गुरबाणी की शिक्षा प्राप्त कर कीर्तन एवं कथा करने लग गए। पिता जी के बाद आपको श्री केसगढ़ साहिब का महंत स्थापित किया गया। गुरुद्वारा सुधार लहर के प्रभावाधीन आपने महंती छोड़ दी तथा गुरुद्वारा साहिब का सारा प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंप दिया। आप श्री अमृतसर में आकर गुरु का बाग के मोर्चे के लिए पंथक सेवा निभाने लगे। आप जी को ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के दर्शनों का बहुत शौक था। पंजा साहिब के शहीदी साके से पहले आप श्री ननकाणा साहिब के दर्शन करने के बाद पंजा साहिब पहुंचे थे। जब गुरु का बाग के मोर्चे में कैद हुए फौजियों को लेकर गाड़ी पहुंची तो आपने गाड़ी को रोकने के लिए शहादत प्राप्त की। उस समय आप जी की उम्र लगभग ३७ वर्ष थी।

रेलवे विभाग के भ्रष्ट हाकिमों ने रेलगाड़ी के ड्राइवर, जो गुजरात का अराई मुसलमान था, को गाड़ी रोकने के दोष में नौकरी से पदच्युत कर दिया। इसकी पड़ताल के लिए हाईकोर्ट के एक जज को लगाया गया। ड्राइवर ने इस पड़ताल में अपना बयान दर्ज करवाते हुए कहा कि "मुझे गाड़ी को किसी भी कीमत पर खड़ी न करने का जुबानी जुक्म हुआ था। मैं उस हुक्म का पूरी जिंमेदारी से पालन करता आ रहा था। गाड़ी पूरी रफ़्तार पर जा रही थी। जब यह प्रताप सिंघ से टकराई तो मुझे इस तरह महसूस हुआ जैसे पहाड़ से टकरा गयी हो। मेरा हाथ वैकम से छूट गया और गाड़ी रुक गयी।" इंजन की पड़ताल करने पर भी यही परिणाम निकला था कि ब्रेक नहीं लगी। इसके बावजूद भी ड्राइवर को बाद में नौकरी से निकाल दिया गया।

स्रोत पुस्तकें :

१. स. नरैण सिंघ एम. ए --अकाली मोरचे अते झब्बर

२. स. गुरदेव सिंघ --रोजनामचा मोरचा गुरू का बाग

३. ज्ञानी भजन सिंघ --शहीद प्रताप सिंघ दी पतनी नाल मुलाकात

४. प्रो: करतार सिंघ एम. ए --सिक्ख इतिहास, भाग-२

५. डा. रतन सिंघ (जग्गी) सिक्ख पंथ विश्व कोश

६. स. रछपाल सिंघ (गिल) --पंजाब कोश 

चढ़दी कला का संकल्प

*-डॉ. अमृत कौर**

नानक नाम चढ़दी कला। तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

सिक्ख धर्म की अरदास में सरबत्त के भले की कामना संकलित है। सिक्ख धर्म चढ़दी कला का मार्ग है। गुरु साहिबान ने अपनी बाणी और व्यक्तिगत जीवन के द्वारा सिक्खों में चढ़दी कला की भावना का संचार किया। *"नाम जपो, किरत करो, वंड छको"* सिक्ख धर्म के ये तीन सिद्धांत चढ़दी कला के मार्ग के आधार-स्तंभ हैं। सिक्ख धर्म *"हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति"* का मार्ग बन गया है। यह मार्ग जलती आग की भट्ठी पर रखी गर्म लोह पर बैठकर *"तेरा कीआ मीठा लागै"* का शबद गुनगुनाते हुए चढ़दी कला का प्रतीक है। दशम गुरु साहिब देश-धर्म की रक्षा के लिए अपना सरवंश न्योछावर कर देते हैं और दादी मां (माता गुजरी जी) अपने छोटे-छोटे पोतों को अपने हाथों से सुसज्जित कर शहादत के मार्ग पर भेज देती हैं। देश-धर्म की शमा पर जलता परवाना बंद-बंद कटवाकर शहीद हो जाता है, पर समझौता नहीं करता।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि वह कौन-सी शक्ति है जो असहनीय दुख की घड़ी में भी चढ़दी कला में रहना सिखलाती है? वो है-- आत्मिक शक्ति, मानसिक बल, दृढ़ इच्छा-शक्ति, *"निसचै करि अपुनी जीत करों"* के आत्मविश्वास के संकल्प द्वारा निरंतर अपनी मंज़िल की ओर आगे बढ़ते जाने का संकल्प। परमात्मा चढ़दी कला का स्रोत है। *"नानक विगसै वेपरवाहु"*-- वह अपनी सृजित रंग-बिरंगी दुनिया को देख-देखकर प्रसन्न हो रहा है। अपनी निर्मित सृष्टि पर रहमत की बरसात करता है-- *"नानक नदरी नदरि निहाल ॥"* तब मनुष्य सोचता है-- *"मिहरवानु साहिब मिरहवानु ॥ साहिबु मेरा मिहरवानु।"* वह मेरे अंग-संग है, वह मेरा माता-पिता-बंधु है, उसे मेरी चिंता है-- *"नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥"* उसका प्रभु पर अडिग विश्वास और भरोसा रंग लाता है। फिर कैसा दुख, कैसा संताप? परमात्मा स्वयं सहायक बन उसके काम संवारता है। *"संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम"* को ध्यान में रखकर प्रभु पर विश्वास रखने वाला मनुष्य सदा चढ़दी कला में रहता है। मनुष्य आदि काल से प्रभु के सम्मुख प्रार्थना करता आया है-- "हे परमात्मा! आप परम शक्ति हो, बल हो, हमें शक्ति और बल प्रदान करो।" प्रभु के सम्मुख सच्चे मन से की गई अरदास कभी व्यर्थ नहीं जाती-- *"कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीए ॥"* परमात्मा उसके सिर पर हाथ रखकर उसके काम संवारता है-- *"लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥"* तथा *"सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥"* उसका यह विश्वास उसका संबल बन जाता है। ऐसे में अटक दरिया भी उसे अटका नहीं

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), मो. :९८१५१-०९९५७*

सकता। वो पर्वतों पर भी राह बना लेता है। आसमान की छाती चीरकर वह रूहानी उड़ाने भरता है। आत्मिक उड़ानें भरने और अपने अंदर आत्मिक शक्ति उत्पन्न करने के लिए प्रभु के नाम का गायन-श्रवण-मनन उसकी सहायता करता है। प्रभु-नाम-सिमरन, गुरबाणी-कीर्तन, धार्मिक साहित्य मनुष्य को आत्मिक रूप से बलवान बना देता है।

महान पुरुष संसार में चढ़दी कला में रहते हुए आश्चर्यजनक कारनामे कर जाते हैं। *"सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥"* के अनुसार दुख में भी रहकर सम मानने की शक्ति नींव में प्रसन्नचित्त चिने जाना स्वीकार कराती है। फांसी के फंदे को चूमते हुए भी गा उठते हैं-- *"सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है। देखना है ज़ोर कितना, बाज़ू-ए-कातिल में है।"* जब मनुष्य सुख-दुख को समान जानकर मानने की अवस्था में पहुंच जाता है तो वह ब्रह्मज्ञानी बन जाता है। वह अपने आपको सकारात्मक सोच के द्वारा दुखों से ऊपर उठकर क्रियात्मक, सृजनात्मक कार्यों में संलग्न कर लेता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरवंश न्योछावर करने की वेला में भी शुक्राना करते हैं, अपने कर्त्तव्य पूरे होनी की खुशी जाहिर करते हैं, वीर-रसी साहित्य-सृजना करते हैं तथा पंथ के बाखूब अगुआ बनकर दिखाते हैं। मानो उनका दुख दवा बन जाता है--*"दुखु दारू सुखु रोगु भइआ . . . ॥"* हारता वो है जो हार मान लेता है। जीवन एक संघर्ष है। जो व्यक्ति इस संघर्ष का सामना चढ़दी कला में रहकर, मुस्कराते हुए करता है वो विश्व-विजयी बन जाता है।

"मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥" चढ़दी कला में रहने के लिए अपने आप को पहचानना, अपनी अंतर्निहित शक्तियों को पहचानकर उन्हें प्रफुल्लित और विकसित करना आवश्यक है। इन शक्तियों को पहचान कर, जीवन का कोई उद्देश्य निश्चिय कर, उसकी ओर कदम बढ़ाते हुए निरंतर आगे बढ़ते जाना चढ़दी कला में रहने के लिए आवश्यक है। सिक्ख धर्म का प्रथम सिद्धांत कर्म करना है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी प्रभु से *"देह सिवा बरु मोहि इहै, शुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥"* का गुण मांगते हैं। मनुष्य की दृढ़ इच्छा-शक्ति उसे निरंतर मंज़िल की ओर अग्रसर करती रहती है। *"आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥"* यह गुरबाणी कहती है। जब काम ही साधना बन जाता है, मिशन बन जाता है तो काम करने में आनंद की अनुभूति होती है। तब कोई नयी कला जन्म लेती है; नए इतिहास का सृजन होता है; अविष्कार किए जाते हैं। राबर्ट फ्रास्टर की ये पंक्तियां हमारा मार्गदर्शन करती हैं :

Wood are lovely dark and deep.
But I have promises to keep.
And Miles to go before I sleep.

भावार्थ :- वन घने और सुंदर हैं। मन कहता है सो जाऊं, पर नहीं, मुझे वायदे पूरे करने हैं, सोने से पहले मीलों चलना है।

मनुष्य की दृढ़ इच्छा-शक्ति उसे *"सवा लाख से एक लड़ाऊं"* की सामर्थ्य प्रदान करती है। दशम पातशाह की यह चढ़दी कला की भावना सम्पूर्ण खालसे में प्रवेश कर गई। *"खालसा मेरो रूप है खास। खालसे मै हउं करों निवास।"* उनकी यह चढ़दी कला की भावना आज भी खालसे के मस्तक पर नूर बनकर चमक रही है।

चढ़दी कला में रहने के लिए आवश्यक है

कि मन में शांति का निवास हो। सरबत्त के भले की भावना मन को शांति प्रदान करती है। दुखी मानव की सेवा, निर्धनों की आवश्यकताओं को पूरा करना वास्तव में प्रभु के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। इस संदर्भ में किसी शायर की पंक्तियां क्या खूब हैं :

घर से दूर है मंदिर का रास्ता,
आओ किसी रोते हुए चेहरे को हंसा दें।

स्वयं प्रसन्न रहकर दूसरों के जीवन में खुशियां बांटना सुखदायी होता है :

औरों को हंसते देखो मन,
हंसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
सब को सुखी बनाओ।

(कामायनी, जयशंकर प्रसाद)

मुस्कराते रहना आवश्यक है। जीवन में मुस्कराते रहना खाने में चटनी की तरह होता है। मुस्कराने से मानसिक तनाव दूर होते हैं :

If you weep, your troubles heap.
If you smile, your troubles reconcile.
If you laugh, your troubles are off.

सदैव गुलाब की भांति हंसता-मुस्कराता चेहरा आस-पास के वातावरण में सुगंध बिखेरता है। मुस्कराते चेहरे वाले लोग ही चढ़दी कला में होते हैं।

चढ़दी कला में रहने के लिए मनुष्य का आशावादी दृष्टिकोण सहायक है। जीवन में उच्च गुणों का विकास मनुष्य को उच्च धरातल पर ला खड़ा करता है। शांति, संतोष, प्रेम, करुणा, परोपकार, सेवा, त्याग आदि गुणों का विकास जीवन में सुखदायक होता है।

आधुनिक मनुष्य अशांत है। उसकी जरूरतों का कई अंत नहीं। वह तृष्णा के चक्कर में उलझा हुआ है। उसके जीवन में तनाव और अशांति है। वह मानसिक शांति खो चुका है। उसका सरल, सादा जीवन पता नहीं कहां खो गया! निराशा के भंवर में फंसा मनुष्य आत्मघात की कगार पर पहुंच गया है। इस तनाव और उदासी को दूर करने के लिए सकारात्मक सोच, आशावादी दृष्टिकोण को जीवन में विकसित करने की आवश्यकता है।

तनाव की अवस्था में प्रकृति का स्पर्श शांति प्रदान करता है। प्रकृति की गोद में लंबी सैर तनाव दूर करने में सहायक सिद्ध होती है। प्रकृति आनंद का स्रोत है। गाती कोयल, नाचते मोर, रिमझिम बरसती फुहार, नदी की लय पर नाचती लहरें, खिले फूल तनाव दूर करते हैं। प्राकृतिक चीजों का रखरखाव उतना ही जरूरी है जितनी जिंदगी के लिए सांसें। प्राकृतिक चीजों में, स्रोतों में प्रभु के अस्तित्व को सरलता से अनुभव किया जा सकता है, इसलिए सदैव प्राकृति-प्रेमी बने रहें। *"बलिहारी कुदरति वसिआ"*--प्रकृति का दैवी स्पर्श मनुष्य को उच्च आध्यात्मिक मंडल में ले जाता है। श्री गुरु अमरदास जी का यह पावन फरमान मानव को कभी मायूस, निढाल नहीं होने देगा :

गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥
ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ *(पन्ना १४१८)* ❂

मानव जीवन के कुछ आचार-व्यवहार

*-स. रमेश सिंघ जमशेदपुर**

श्री गुरु नानक देव जी ने प्रभु-प्राप्ति का जो मार्ग दुनिया को सुझाया वह 'नाम' पर आधारित है। 'नाम' का अर्थ किसी एक विशेष शब्द या शब्दों का बार-बार उच्चारण मात्र नहीं बल्कि 'नाम' को गुरु जी ने जीवन जीने का एक ढंग (मार्ग) बताया है जिसे अपनाकर कोई भी, चाहे वो किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण का हो, प्रभु-मार्ग पर अग्रसर हो सकता है तथा लोक-परलोक सुखमय बना सकता है। प्रभु-नाम जपने का जो सिद्धांत श्री गुरु नानक देव जी ने प्रतिपादित किया, उससे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित अन्य समस्त बाणीकार पूर्णत: सहमत थे। प्रभु-नाम-सिमरन के सिद्धांत के कुछ सुख्य सूत्र जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी से उजागर होते हैं, इस प्रकार हैं :-

(१) आठ पहर निकटि करि जानै : आठों पहर अर्थात् हर पल यह याद रहे कि प्रभु हमारे अंग-संग हैं। इस प्रकार जो अपने दैनिक कार-व्यवहार करते हुए समस्त गुणों के मालिक परमात्मा की याद में रहेगा। उसमें प्रभु के गुणों का निवास हो जाएगा। प्रभु को हर वक्त याद करने का सबसे सरल तरीका है हर दम प्रभु के भय में रहना अर्थात् प्रत्येक काम प्रभु-हुक्म के दायरे में रहकर करना।

(२) प्रभ का कीआ मीठा मानै : प्रभु जो कुछ भी करता है उसे सहर्ष स्वीकार करना। जब सब कुछ करने-कराने वाले प्रभु हैं-- *"करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥"* तो फिर बुरा नहीं हो सकता। व्यापार में घाटा, शारीरिक कष्ट आदि यदि हमें दुखी करते हैं तो हमें परमात्मा के समक्ष अरदास करके उससे सहन-शक्ति की याचना करनी चाहिए।

(३) एकु नामु संतन आधारु : केवल प्रभु का नाम हमारे जीवन का आधार हो। जिसके जीवन का आधार हरि-नाम है उसे सपने में भी दुख नहीं हो सकता-- *"जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥"* दूसरी ओर, जो प्रभु को भुलाकर जीवन गुज़ारता है उसे सपने में भी सुख नहीं हो सकता-- *"नामु बिसारि करे रस भोग ॥ सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥"*

(४) होइ रहे सभ की पग छारु : हमारे अंदर इतनी विनम्रता आए कि हम सबकी चरण-धूलि बनकर जीयें। मनुष्य और परमात्मा के बीच सबसे बड़ी बाधा है-- अहंकार। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इसके जाल से न बच सके-- *"मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥"* अहंकार को जीतने का उपाय है स्वयं के अवगुणों को पहचानना। यह पहचान जितनी गहरी होगी मन उतना ही विनम्र होता जाएगा। विनम्रता (सत्य है) को कमज़ोरी नहीं समझना चाहिए। गुरु साहिब तो इसे (मन का) हथियार मानते हैं-- *"गरीबी गदा हमारी ॥ खंना सगल रेनु छारी ॥"* अर्थात् विनम्रता की गदा और सब की चरण-धूलि बनने से मन में कोई विकार टिक नहीं सकता।

16 Kasidih East, Road No.1, Jamshedpur-831001 (Jharkhand); Mob. 96318-21636

(५) वरतणि जा कै केवल नाम : हमारे जीवन के समस्त व्यवहार का आधार केवल प्रभु का नाम हो। नाम-विहीन रिश्ता, व्यवहार झूठा है, अत: दुख पैदा करता है।

(६) अनद रूप कीरतनु बिस्राम : हमारा विश्राम, हमारा मनोरंजन आनंददायक प्रभु-कीर्तन हो। जिसे गुरबाणी-कीर्तन रस का स्वाद आ जाता है, वह अन्य रसों की और आकृष्ट नहीं होता-- *"त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥"* तृष्णा वो आग है जिसे केवल नाम-जल बुझा सकता है।

(७) मित्र सत्रु जा कै एक समानै : हम मित्र और शत्रु को एक जैसा समझें। *"जो दीसै सो तेरा रूपु"* तथा *"सभै घट रामु बोलै"* अर्थात् मित्र और शत्रु दोनों में उसी प्रभु की ज्योति है तो फिर आपस में अंतर कैसा? शत्रु के साथ शत्रुता की बजाए सद्‌बुद्धि की प्रार्थना करें।

(८) प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै : प्रभु के अलावा अन्य किसी में भी हमारी आस्था, हमारा भरोसा, हमारा विश्वास न हो। मनुष्य ही सब दातें देने वाला है, अत: उसी को दाता मानना चाहिए। उसी का शुक्राना करना चाहिए तथा उसी में प्रसन्न रहना चाहिए।

(९) घालि खाइ किछु हथहु देइ : मेहनत द्वारा ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाना। गुरु साहिबान ने इसे जीवन का अभिन्न अंग बना दिया। श्रम व ईमानदारी जैसे गुणों को जीवन में धारण करना आवश्यक बना दिया। इसके साथ ही समाज में व्याप्त विषमता (किसी के पास खाने का ढेर है तो कोई दाने-दाने को मोहताज है) को दूर करने का प्रयास करने की खातिर यह आदेश दिया कि मनुष्य जो भी कमाएगा, उसे बांटकर खाएगा। वो सामाजिक प्राणी होने के नाते समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह भी करेगा।

(१०) पर का बुरा न राखहु चीत : जीवन में प्रत्येक व्यक्ति सुखी रहना चाहता है। सुखमय जीवन के लिए गुरु जी ने एक फार्मूला सुझाया कि किसी के प्रति भी मन में बुरी भावना पैदा न हो। यह तभी संभव है यदि जीव गुरु के उपदेशों को अपने ख़्यालों में बसा ले। *"हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि"* --मन में जो भी विकार भरे पड़े हैं उनको भुलाने का काम थोक रूप में करना चाहिए और केवल एक ही परमात्मा का नाम-सिमरन करना चाहिए।



कविता

गुरमति ज्ञान पत्रिका

गुरमति ज्ञान है जब से पाई।
जीने की राह समझ में आई।
एक माटी के सब नर-नारी।
कोई न जात न पात हमारी।
पहले 'पंगत' पाछे 'संगत'।
'मीरी-पीरी' भेद को समझत।
अकाल पुरख का धर के ध्यान।
सीखा हमने 'रहित-ज्ञान'।

गुरमति की रहिणी को जाना।
सब गुरुओं का जीवन जाना।
शबद-गुरु का भेद है पाया।
देश-धर्म पर मिटना आया।
सफल हुआ यह जीवन सारा।
गुरु ग्रंथ साहिब है सबसे न्यारा।
बना रहे यह जीवन का आधार।
सारे विश्व में हो इसका प्रसार।

-श्री हरि सिंह भारती, डी-१२२, शास्त्री नगर, मेरठ-२५०००४; मो ९८३७८-७७३६६

ऐतिहासिक तेग

*-स. सुरजीत सिंघ**

जयपुर के प्रसिद्ध पूर्व राजघराने में खालसा पंथ के संस्थापक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ऐतिहासिक तेग की सेवा-संभाल श्रद्धापूर्वक आज भी यथावत होती चली आ रही है। जयपुर राजघराने के सिटी पैलेस स्थित चंद्रमहल के पूजा-घर में रखी वंदनीय ऐतिहासिक तेग पूजा-घर की शोभा बढ़ा रही है।

इतिहास साक्षी है कि हिमाचल प्रदेश की पूर्व सिरमौर रियासत का राजघराना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का बहुत श्रद्धालु और प्रेमी रहा है। इनकी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पूरी आस्था थी। मुगल सम्राट जहांगीर ने मध्य प्रदेश के ग्वालियर के किले की जेल में देश की विभिन्न रियासतों के विभिन्न वर्गों के ५२ राजाओं को यातनाएं देते हुए आजीवन बंदी बना रखा था, जिन्हें सिक्ख धर्म के षठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सकुशल मुक्त कराया था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तेग को कृपाण अर्थात् कृपा-दया की पात्र कहा है, क्योंकि इसका दुरुपयोग पूर्णतया वर्जित है और तेग का उपयोग भी सदुपयोग के रूप में केवल गरीब, मजलूमों की रक्षार्थ, अधर्म-जुल्म के विरुद्ध किया जा सकता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित 'जफ़रनामा' बाणी में लिखा है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥

अर्थात् जब धर्म व शांति स्थाप्ति के समस्त प्रयास (रास्ते) असफल हो जाएं तो जब्र-जुल्म, असत्य एवं अन्याय के विरुद्ध तेग का उपयोग धर्म एवं न्यायसंगत है। तभी तो अन्याय के विरुद्ध गुरु जी की तेग जब उठती थी तो वह काल का रूप धारण कर बिजली की तरह चमकती-कड़कती हुई प्रलय-सी मचा देती थी।

सत्रहवीं शताब्दी में लगभग ३०० वर्ष पूर्व शक्ति और भक्ति, संत और सिपाही की प्रतीक तेग श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हिमाचल प्रदेश के पूर्व सिरमौर राजघराने के आग्रह पर उन्हें उपहारस्वरूप भेंट की थी, जिसकी सेवा-संभाल राजघराने द्वारा निरंतर की जाती रही है। सिरमौर राजघराने के वंशज महाराजा राजेंद्र प्रकाश व महारानी इंद्रा देवी की सुपुत्री राजकुमारी पद्मनी देवी भी बाल्य-काल से ही अपने माता-पिता की भाती तेग का सत्कार किया करती थी। जयपुर राजघराने में राजकुमारी पद्मनी देवी की शादी हो गई। वर्ष १९६४ ई में पूर्व सिरमौर रियासत के महाराजा राजेंद्र प्रकाश, जो महारानी पद्मनी देवी के पिता थे, का निधन हो गया। जयपुर राजघराने की महारानी पद्मनी देवी इस ऐतिहासक तेग को उचित सेवा-संभाल हेतु श्रद्धापूर्वक अपने साथ अपनी ससुराल जयपुर ले गई और सिटी पैलेस

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७; मो. ९४१३६-५१९१७*

स्थित चंद्रमहल के पूजा-घर में सुशोभित कर दिया, जो आज भी श्रद्धा की पात्र बनी हुई है और जिसकी सेवा-संभाल निरंतर होती आ रही है।

राष्ट्रीय डाक टिकटों एवं डाक मुहरों में प्रदर्शित खालसा गौरव-गाथा :

विश्व के सभी देशों में डाक टिकटें प्रचलन में होती हैं जो देश की संस्कृति, रहन-सहन, मान-मर्यादा इत्यादि को दर्पण की तरह परिलक्षित और प्रतिबिंबित करती हैं। इसी प्रकार भारत सरकार द्वारा डाक विभाग में अन्य डाक टिकटों के साथ-साथ समय-समय पर सिक्ख इतिहास से सम्बंधित डाक टिकटें भी विभिन्न मूल्यों के क्रम में प्रकाशित की जाती रही हैं जिनका संक्षिप्त विवरण क्रमशः निम्न अनुसार है :-

१. सन् १९३५ में भारत सरकार की नार्थ-वेस्ट रेलवे द्वारा दो प्रकार के फोटो पोस्ट कार्ड को प्रकाशित किया गया था जिनमें से प्रत्येक का मूल्य ९ पाई था। प्रथम पोस्ट कार्ड पर पवित्र अमृत-सरोवर के बीचो-बीच स्थापित श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर का दृश्य था, जबकि द्वितीय पोस्ट कार्ड पर डेरा बाबा नानक, करतारपुर (अब पाकिस्तान में) दर्शाया गया।

२. १५ अगस्त, सन् १९४९ ई को विश्व-प्रसिद्ध श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर पर १२ आने मूल्य का नीले रंग का डाक टिकट प्रकाशित किया गया था, जिसमें श्री हरिमंदर साहिब चित्रांकित किया गया।

३. १७ जनवरी, १९६७ ई को दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३०० वर्षीय प्रकाश उत्सव के अवसर पर १५ पैसे मूल्य का डाक टिकट निकाला गया था, जिसमें (गुरुद्वारा) तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब, बिहार दर्शाया गया था, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म-स्थान है।

४. नवंबर, १९६९ ई को श्री गुरु नानक देव जी के ५०० वर्षीय प्रकाश उत्सव के अवसर पर २० पैसे मूल्य का सलेटी रंग का डाक टिकट प्रकाशित किया गया था, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी का जन्म-स्थल श्री ननकाणा साहिब (पाकिस्तान) का चित्रांकन किया गया था।

५. १६ दिसंबर, १९७५ ई को नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब के ३००वें शहीदी दिवस के अवसर पर २५ पैसे मूल्य का बहुरंगी डाक टिकट प्रकाशित किया गया था, जिसमें गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, चांदनी चौक, दिल्ली का चित्रांकन किया गया, जहां गुरु जी ने 'हिंद की चादर' बनकर शहादत दी थी।

६. २१ दिसंबर, १९७९ ई को तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के ५०० वर्षीय प्रकाश उत्सव के अवसर पर ३० पैसे मूल्य का बहुरंगी डाक टिकट प्रकाशित किया गया था, जिसमें गुरुद्वारा बाउली साहिब, गोइंदवाल साहिब (पंजाब) दर्शाया गया था।

७. केनया की राष्ट्रीय सरकार ने खालसा पंथ की त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में सिक्ख पंथ की परंपरा पर डाक टिकट जारी किया था, जिस पर केसरी निशान साहिब का चित्रांकन किया गया था।

८. २६ दिसंबर, १९८७ ई. को श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के ४०० वर्षीय स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में ६० पैसे मूल्य का श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर को दर्शाता

हुआ बहुरंगी डाक टिकट प्रकाशित किया गया था।

९. १९ अक्तूबर, १९९६ ई को सिक्ख रेजिमेंट की वीरता और उसकी स्थापना के १५० वर्ष पूरे होने पर ५ रुपए मूल्य का डाक टिकट प्रकाशित किया गया था। यह रेजिमेंट वर्ष १८४६ में अस्तित्व में आई थी।

१०. १८ दिसंबर, १९९८ ई को रेडक्रास आंदोलन के अग्रदूत भाई घनईया जी, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परम सिक्ख थे, पर २ रुपए मूल्य का डाक टिकट प्रकाशित किया, जिसमें भाई घनईया जी को आदर्श जनसेवा करते हुए प्रदर्शित किया गया था।

११. वर्ष १९९९ ई में कनाडा की राष्ट्रीय सरकार ने खालसा पंथ के त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में डाक टिकट जारी किया था।

१२. अप्रैल, १९९९ ई को खालसा पंथ की त्रिशताब्दी के अवसर पर ३ रुपए मूल्य का नीले-भूरे-सफेद रंग का डाक टिकट प्रकाशित किया, जिसमें तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब का चित्रांकन किया गया था।

डाक टिकटों के अलावा भारत सरकार द्वारा सिक्ख इतिहास से संबंधित 'प्रथम दिवस आवरण' एवं 'डाक मुहरें' भी जारी की जाती रही हैं :-

* वर्ष १९३५ से १९४४ ई के मध्य 'गोल्डन टेंपल' (श्री हरिमंदर साहिब) नाम से डाक-मुहर जारी की गई थी।

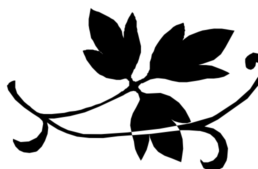
* वर्ष १९६७ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३०० वर्षीय प्रकाश पर्व के शुभ अवसर पर विशेष डाक मुहर जारी की गई, जिसके मध्य में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अंकित था।

* वर्ष १९६९ में श्री गुरु नानक देव जी के ५०० वर्षीय प्रकाश पर्व के शुभ अवसर पर जारी प्रथम दिवस आवरण में गुरुद्वारा बेर साहिब, सुलतानपुर लोधी का चित्रांकन किया हुआ था, जबकि विशेष डाक मुहर में श्री गुरु नानक देव जी का चित्र अंकित था।

* वर्ष १९७५ में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के ३०० वर्षीय शहीदी पर्व के उपलक्ष्य में जारी प्रथम दिवस आवरण में गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब, दिल्ली का चित्रांकन किया हुआ था, जबकि विशेष डाक मुहर में गुरुद्वारा साहिब के ऊपरी गुंबद को दर्शाते हुए मध्य में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का चित्र अंकित था।

* वर्ष १९९८ में रेडक्रास आंदोलन के अग्रदूत भाई घनईया जी को प्रथम दिवस आवरण में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मरहम की डिबिया लेते हुए चित्रांकित किया हुआ था, जबकि विशेष डाक मुहर पर भाई घनईया जी का चित्र अंकित था।

इस प्रकार विभिन्न डाक टिकटों एंव मुहरों से सिक्ख इतिहास की प्रेरणादायक गौरव-गाथा प्रदर्शित होती है। 



प्राकृतिक स्रोतों को प्रदूषित होने से बचायें!

*-स. दलवीर सिंघ लुधियानवी**

अकाल पुरख परमात्मा ने भारत देश पर बहुत बख़्शिश की है जो इसको प्राकृतिक स्रोतों से मालामाल किया है। आज विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है, फिर भी वह प्राकृतिक स्रोतों का मुकाबला नहीं कर सकती, इसलिए हमें इन स्रोतों को संभालने के लिए हर वक्त तत्पर रहना चाहिए। हम सबका यही फ़र्ज़ बनता है कि हम प्राकृतिक स्रोतों की संभाल करें और इनको प्रदूषित होने से बचाएं। हवा, पानी और धरती हमारी सृष्टि के तीन मुख्य अंग हैं। इनके बिना ज़िंदगी का चलना असंभव है। कई अन्य वस्तुएं भी प्रकृति की देन हैं जो इस सृष्टि को चार चांद लगा रही हैं। उत्तरी जोन में हिमालय पर्वत, जो भारतीय समाज के लिए बहुत ही फायदेमंद साबित हुआ है, प्राकृतिक सीमा बनकर सुरक्षा का काम करता है। यह जड़ी-बूटियों का भंडार है, जो दवाइयों के काम आती हैं। इसके अतिरिक्त लोहे, कोयले, सोने आदि की खानें भी भारत में मौजूद हैं। जल स्रोत की महत्ता पावन गुरबाणी में भी दर्शायी गई है :

--पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
(पन्ना ८)

--जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
(पन्ना १३३)

--पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
(पन्ना ४७२)

हवा को गुरु का, पानी को पिता का और धरती को माता का दर्जा देकर सत्कारा गया है।

धरती : गुरबाणी में धरती को 'मां' कहकर नवाजा है। मां कभी भी अपने बच्चों का बुरा नहीं सोचती, हमेशा प्यार की ही झड़ी लगाती है। बच्चों का भी फर्ज़ बनता है कि वे अपनी मां की पूरी इज्जत करें। हमें धरती मां की सुंदरता को कायम रखना चाहिए, मौसम के अनुसार पेड़-पौधे लगाने चाहिए, ताकि धरती मां के आंगन को मैला होने से बचाया जा सके।

जब हम कोई चीज़ खाते हैं तो प्राय: छिलका व लिफाफा धरती पर फेंकने से संकोच नहीं करते। यूं हम अपनी राहों में खुद ही कांटे बो रहे हैं। हमारे द्वारा फेंकी वस्तु गल-सड़कर बदबू मारती है और फिर यही बदबू भयानक से भयानक बीमारियों को जन्म देती है, जिससे सारा वातावरण पलीत हो जाता है। दुकानों के बाहर, पार्कों-बाज़ारों आदि में योग्य जगह पर बेकार चीजें फेंकने के लिए टोकरियां या डिब्बे आदि रखने चाहिए।

पेड़ हमें आक्सीजन देते हैं और बदले में कार्बनडाईऑक्साईड लेते हैं। पेड़ हमारे असली दोस्त हैं। सरकार सरकारी नर्सरियों से लोगों को मुफ्त पौधे प्रदान करे, ताकि अधिक से अधिक पौधे लगाए जा सकें, इससे प्रदूषण कम होगा।

पानी : पानी एक अनमोल तोहफा है, जिसके सहारे सारी सृष्टि जीवित है। गुरबाणी में पानी को पिता के समान दर्जा दिया गया है। भगवान ने हम पंजाब के लोगों को पांच दरिया बख़्शे हैं,

**४०२-ई, शहीद भगत सिंघ नगर, पक्खोवाल रोड, लुधियाना-१४१०१३; मो. ९४१७०-०१९८३*

परंतु आज इन दरियाओं की धरती पर भी लोग पानी को तरस रहे हैं। आज धरती के नीचे का पानी और भी नीचे जा रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार ज़िला शहीद भगत सिंघ नगर (हुशियारपुर) को छोड़कर बाकी सभी ज़िलों का पानी का स्तर गिर रहा है। पटियाला के पातड़ां उपक्षेत्र ने सभी रिकार्ड तोड़ दिए हैं। मोगा और संगरूर की स्थिति भी अति नाजुक है। ज़िला संगरूर में पिछले १० सालों में पानी का स्तर ०.८१ मीटर नीचे चला गया है, जून, २००५ में ही १.२० मीटर नीचे चला गया। इससे भी भयानक स्थिति मोगा ज़िले की है। साल २००५ में १.४८ मीटर पानी नीचे चला गया, जबकि पिछले १० सालों में १.२६ मीटर पानी नीचे चला गया था। पंजाब खेतीबाड़ी यूनीवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने खोज के दौरान यह बताया है कि एक किलो चावल पैदा करने के लिए ३५०० लीटर पानी का प्रयोग होता है।

अगर पानी का यही हाल रहा तो कुछ ही वर्षों में पंजाब रेगिस्तान का रूप धारण कर लेगा। पानी के लिए घर-घर झगड़े हो रहे हैं। सही कहा जा रहा है कि भविष्य में पानी की खातिर ही 'तीसरा विश्व-युद्ध' होगा। पानी को बचाने के लिए आम लोगों में जागरूकता की लहर चलाई जानी चाहिए।

आज पानी की कमी क्यों?

--पानी की ज्यादा बर्बादी होने के कारणा ही आज हमें ये दिन देखने पड़ रहे हैं। देखने में आया है कि लोग पानी की टूटियां बंद नहीं करते और सरकारी टूटियां तो हमेशा खराब रहने के कारण चलती ही रहती हैं।

--पानी का काफी हिस्सा आज दूषित हो गया है और बहुत सारे जीव-जंतु दूषित पानी की भेंट चढ़ गए हैं। इसके कई कारण हैं, जैसे कि कारखानों और सीवरेज का गंदा पानी नदियों में फेंकने से पानी दूषित हो जाता है।

--समुद्रों और महासागर में तेल मिलने अथवा मिक्स होने के कारण पानी दूषित हो जाता है, जिसके फलस्वरूप जल के भीतर का जीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

--गेहूं-धान के फसली चक्कर के कारण भी धरती के नीचे का पानी और नीचे चला गया है, जिस कारण आज पानी की बहुत कमी महसूस हो रही है।

--नदियों-नालों की संभाल अच्छी तरह नहीं हो रही है। रासायनिक पदार्थों के कारण भी पानी दूषित हो रहा है, जो जानलेवा बीमारियों का कारण बनता है।

पानी की बचत कैसे की जाए?

--पानी को बचाने के लिए लोगों में जागरूकता की लहर स्कूलों, कॉलेजों, यूनीवर्सिटियों, धार्मिक स्थानों से चलाई जाए और यह भी बताया जाए कि पानी इस सृष्टि की ज़िंद-जान है।

--कारखानों और सीवरेज का पानी नदियों-नालों में फेंकने से पहले इसे प्रदूषण-रहित किया जाए।

--आज फसली चक्कर से निकलने की जरूरत है और वे फसलें ज्यादा बोनी चाहिए जो पानी कम मांगती हैं, जैसे गन्ना, दालें आदि।

--जैविक खेती या प्राकृतिक खेती अपनानी चाहिए, क्योंकि यह ज़हर-मुक्त है, जिसके फलस्वरूप पानी की काफी बचत हो जाती है। वे मनुष्य, जो पानी को बचाने का काम करते हैं,. सरकार को उन्हें सम्मानित करना चाहिए।

हम सबको ही प्राकृतिक स्रोतों से प्यार करना चाहिए न कि खिलवाड़। यदि ऐसा हो जाए तो मौसम सुहावना बन सकता है, जो सारे

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

गुरबाणी चिंतनधारा : ७३

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥
करन करावन आपे आपि ॥
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ (पन्ना २७८)

बारहवीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पातशाह ने जीव की तृष्णालु प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है और साथ ही गूढ़ तथ्य समझाया है कि इन इच्छाओं का कोई पारावार नहीं। जीव संतोष रूपी धन के बिना सदैव भटकता रहता है और मर जाता है। संतोष में ही सच्ची एवं पूर्ण तृप्ति है अन्यथा इन लालसाओं का दायरा जितना व्यापक है जीव उतना ही दुखी होता जाता है।

गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जब मनुष्य हज़ारों (रुपए) कमा लेता है तो वह करोड़ों की चाहत में दौड़ता है अर्थात् हज़ारों कमा कर उसे शांति नहीं मिलती तो उसे करोड़ों कमाने की चाहत पैदा होती है। धन के पीछे दौड़ने से वह कभी तृप्त नहीं होता। वह माया के अनेक पदार्थों का भोग करता है लेकिन कभी शांत नहीं होता। जितनी माया इकट्ठी करता है उतना ही उसमें खचित होता जाता है और जितना उसकी दलदल में धंसता जाता है उतना ही दुखी होता है। गुरु जी समझाते हैं कि बिना संतोष के कोई भी तृप्त नहीं होता। जैसे कोई सपने में योजना बनाता है लेकिन वह पूरी नहीं होती, वैसे ही असंतुष्ट मनुष्य को कभी शांति नहीं मिलती। स्वप्न में बनाई योजनाओं की तरह उसके समस्त प्रयोजन व्यर्थ ही जाते हैं। इसके विपरीत नाम में रंगे जीव हेतु सर्वत्र सुख ही सुख है अर्थात् असली आनंद, सच्चा सुख परमेश्वर के नाम से प्यार करने वाले को ही मिलता है। प्रभु-नाम का प्रेम किसी भाग्यशाली जीव को ही नसीब होता है। सब कुछ करने एवं करवाने वाला प्रभु आप ही है। पंचम पातशाह कलयुगी जीवों को यही समझाते हैं कि सर्वसुखदाता परमेश्वर का नाम सदा ही जपते रहना चाहिए, क्योंकि इसी से ही जीव की सच्ची और पूर्ण तृप्ति संभव है। वास्तव में इच्छाओं का कोई पारावार नहीं। जैसे आग में घी डालने से वह और तेजी से भड़कती है, ठीक इसी प्रकार इच्छाओं की पूर्ति कभी इच्छाओं को पूरा करने से नहीं हो सकती। गुरु नानक पातशाह ने जपु जी साहिब में समझाया है कि अगर जीव सारे भवनों के पदार्थ भी प्राप्त कर ले तब भी उसकी तृष्णा नहीं मिट सकती :

भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥
(पन्ना १)

वस्तुतः जीवन खत्म हो जाता है, जीव की इच्छाएं नहीं खत्म होती, जैसा कि लोक-प्रचलित

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

गीत है :

आसां कदे बंदे दीआं हुंदीआं ना पूरीआं।
कलपदा बथेरा फिर वी रहिंदीआं अधूरीआं।
आखदे सिआणे माइआ माइआ नूं है जोड़दी।
लक्खां वालिआं नू आस रहिंदी है करोड़ दी।
करोड़ हो जाण फिर वी पैंदीआं ना पूरीआं।
आसां कदे बंदे दीआं हुंदीआं ना पूरीआं।

इसी तृष्णा में विकारी हुआ जीव दुखी रहता है तथा विकारों की अग्नि में जलता रहता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥
जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ (पन्ना १०४४)

गुरबाणी आशयानुसार इस तृष्णा रूपी विकार से बचने के लिए जीव के पास एक ही मार्ग है वो यह कि परमेश्वर के नाम से जुड़ा जाए :

त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ (पन्ना ६८२)

निष्कर्षत: परमेश्वर के नाम से ही व्यक्ति की तृष्णा बुझती है। गुरु के उपदेश से अनंत संतोष की प्राप्ति होती है तथा प्रभु-चरणों में चित्त पूर्णतया एकाग्र हो जाता है।

करन करावन करनैहारु ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥
बूझै देखै करै बिबेक ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥ (पन्ना २७९)

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह पारब्रह्म परमेश्वर को सर्वकला-समर्थ, सब कुछ का कर्ता एवं कारण मानते हैं। साथ ही उसके मनमौजी स्वभाव का भी ज़िक्र करते हैं। प्रभु अविनाशी है और कण-कण में समाया हुआ है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे जीव! तू विचार करके देख ले अर्थात् अच्छी तरह निरीक्षण-परीक्षण करके देख ले, वास्तव में तेरे अपने हाथ में कुछ नहीं है। परमेश्वर स्वयं ही सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है। प्रभु जैसी दृष्टि (कृपा) जीव पर डालता है जीव बिलकुल वैसा ही हो जाता है। प्रभु खुद ही सब कुछ है। परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया है अर्थात् जिसका भी निर्माण किया है अपनी मौज से, स्वेच्छा से किया है। ऐसा मालिक सबके साथ भी है तथा दूर भी। परमेश्वर सब कुछ देख रहा है, समझ रहा है और प्रत्येक कार्य की परख कर निर्णय भी स्वयं कर रहा है। उसके निर्णय विवेकपूर्ण हैं। परमेश्वर कभी एक है तो कभी अनेक रूप धारण कर लेता है। वह अविनाशी है अर्थात् न कभी जन्म लेता है और कभी मरता भी नहीं है। वह जन्म-मरण से परे है। पंचम पातशाह असटपदी की अंतिम पंक्ति में फरमान करते हैं कि परमेश्वर सदैव अपने आप में ही समाया हुआ है। वह सर्वव्यापक है।

उपरोक्त पउड़ी जैसा भाव श्री गुरु नानक पातशाह की बाणी में भी दर्शनीय है जहां गुरुदेव ने पारब्रह्म की आलौकिक आरती, जोकि प्रकृति द्वारा नित्य ही हो रही है, का सुंदर बिम्ब प्रस्तुत किया है, साथ ही उसके निर्गुण और सगुण स्वरूप की सुंदर व्याख्या की है, यथा :

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुोही ॥. . .
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥

तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

वस्तुतः सर्वत्र में वही समाया हुआ है। उसी के नूर से समस्त जीव अस्तित्व में हैं।

आपि उपदेसै समझै आपि ॥
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥
उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥
थान थनंतरि एकै सोइ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
कउतक करै रंग आपार ॥
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥

उपरोक्त पउड़ी में पंचम पातशाह जी ने परमेश्वर को बेशकीमती बताया है जिसकी कीमत कोई आंक नहीं सकता। वह ज्ञान का अथाह भंडार है तथा सर्वव्यापी है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि पारब्रह्म परमेश्वर (पूर्ण गुरु के रूप में) उपदेश देने वाला भी आप है तथा (शिष्य रूप में) उपदेश लेने वाला भी आप ही है। सबको ज्ञान देने वाला तथा ज्ञान लेने वाला भी परमात्मा स्वयं ही है। वह सर्वत्र व्याप्त होकर सबमें समाया हुआ है। अपना विस्तार उसने स्वयं ही किया है। जो कुछ है उसी का है और वही सबका सृष्टा अर्थात् सबकी रचना करने वाला है। सब कुछ उसी का है और वही निर्माण-कर्त्ता है। अगली पंक्ति में गुरुदेव प्रश्न करते हैं कि बताओ उस प्रभु के बिना कोई हो सकता है? (उत्तर भी स्पष्ट है कि उसके बिना कोई नहीं हो सकता, न ही कोई कण और न ही कोई जन।) सर्वत्र में परमेश्वर मौजूद है। सभी स्थानों तथा स्थानांतरों में वाहिगुरु आप ही समाया हुआ है। अपने कौतुकों (विचित्र कारनामों) को करने वाला प्रभु आप ही है और उसके ये कौतुक भी अनंत हैं। उसके विचित्र रंग-तमाशों का कोई अंत नहीं। जीवों के समस्त हृदयों (मनों) में वह आप ही बस रहा है और सब हृदय (मन) उस परमेश्वर के अपने ही हैं अर्थात् परमेश्वर जल में तरंग की तरह है। जैसे पानी से लहर उठती है फिर उसी में समा जाती है, ठीक वैसे ही प्रभु का जीवों के साथ रिश्ता है। श्री गुरु अरजन देव जी अंतिम पंक्ति में परमेश्वर को बेशकीमती बतलाते हुए स्पष्ट करते हैं कि उसकी कीमत को कोई आंक (बयान) नहीं सकता। वह अनमोल है।

उपरोक्त पउड़ी में पंचम पातशाह ने परमेश्वर को सर्वव्यापी तथा उसकी लीला को आश्चर्यचकित कर देने वाली कहा है। इस गूढ़ तथ्य को भी स्पष्ट किया है कि बेशक वह सब में समाया हुआ है फिर भी वह सबसे निर्लेप है। उसके गुण अकथनीय हैं। उसका पारावार पाना असंभव है। उसके अनंत कौतुकों को देखकर गुरमुख विस्माद में आकर पुकार उठते हैं :

खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥
झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥ (पन्ना ११३७)

वस्तुतः गुणी-जन इसे ही आत्मिक जीवन की पहली सीढ़ी मानते हैं जिसके द्वारा प्रेम-भक्ति में लीन होकर परम-पद तक की प्राप्ति मुमकिन है। यही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। परमेश्वर की असीमता को ससीम (एक सीमा में) बुद्धि द्वारा नहीं जाना जा सकता और चिंतकों के चिंतनानुसार उसका अंत पाना मनुष्य का जीवन-मनोरथ भी नहीं है, उसमें अभेद हो जाना ही मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है। गुरबाणी आशयानुसार उसका गुणगान करते हुए जब जीव आनंद का अनुभव करता है तो

वह शब्दों द्वारा प्रभु को वैसे ही अभिव्यक्त नहीं कर पाता जैसे गूंगा व्यक्ति मिठाई खाकर उसकी मिठास को अनुभव तो करता है मगर शब्दों द्वारा ब्यान करने में असमर्थ होता है। भक्त कबीर जी की पावन बाणी उदाहरण रूप में प्रस्तुत है :

गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ *(पन्ना ६५७)*

ऐसी जीव-स्त्री प्रियतम परमेश्वर में एकाकार हुई अपनी अवस्था को भावों से अभिव्यक्ति देती प्रतीत होती है :

मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥
रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥
(पन्ना ४५९)

परमेश्वर के गुण अकथनीय हैं। जिसे परमेश्वर अपनी सिफत-सलाह का गुण बख़्शता है वही इस आनंद का अनुभव करने का सौभाग्य हासिल कर अपना दुर्लभ जीवन सफल बना लेता है। वाहिगुरु हम कृतघ्नों पर तरस खाकर कोई किनका अपने नाम का हमारी भी झोली में डाल दे, यही अरदास हमें हर पल परवदिगार के चरणों में तहे दिल से करनी है।

सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥
भला भला भला तेरा रूप ॥
अति सुंदर अपार अनूप ॥
निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

बारहवीं असटपदी की अंतिम असटपदी में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर के अंनत गुणों का ज़िक्र करते हुए स्पष्ट किया है कि उसके अनुपम गुणों का गान केवल और केवल गुरु-कृपा तथा गुरु-मार्गदर्शन द्वारा ही संभव है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर सबका मालिक (स्वामी) है तथा सदा सत्य स्वरूप है अर्थात् सदैव कायम रहने वाला है। गुरु की रहमत से किसी विरले ने इस तथ्य को उजागर किया है कि केवल परिपूर्ण परमेश्वर ही सदा स्थिर है। पारब्रह्म करता पुरख ने जो भी रचना की है वह पूर्ण है (सत्य है) अर्थात् सत्य स्वरूप प्रभु ने जो भी किया है वह सत्य है। करोड़ों में से किसी विरले ने इस सत्य को पहचाना है। हे मालिक! तेरा रूप भला है, अत्यंत सुंदर है, अपरंपार है, बेमिसाल है। तेरी अति मनमोहक छवि, अपार सौंदर्य, अप्रतिम रूप को शब्दों द्वारा ब्यान नहीं किया जा सकता। तेरे मनमोहक रूप सदृश्य तेरी बाणी भी अत्यंत मीठी (मधुर) एवं निर्मल (पवित्र) है। ऐसी निर्मल बाणी प्रत्येक शरीर में कानों द्वारा सुनी जा रही है अर्थात् प्राकृतिक रूप से तेरी मीठी बोल-वाणी कान रूपी ज्ञानेंद्रियों द्वारा हृदय-घर में प्रवेश कर रही है, रसना (जीभ) रूपी ज्ञानेंद्रिय द्वारा उच्चारण की जा रही है। इस तरह हे प्रभु! प्रत्येक शरीर में तुम आप ही बोल रहे हो। गुरु पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि ऐसे परमेश्वर का पवित्र नाम, जो हृदय से जपता है, पवित्र से पुनीत हो जाता है।

परमेश्वर की बाणी निर्मल है और इसे प्रेम एवं श्रद्धा-भाव से पढ़ने एवं सुनने वालों का हृदय भी निर्मल हो जाता है। पावन बाणी पारब्रह्म परमेश्वर का ही पर्याय है। गुरबाणी में इस भाव के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं :

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥
(पन्ना ५१५)

इसलिए गुरबाणी का पावन उपदेश है कि सच्ची बाणी का गायन करते रहो। यही सर्वोत्तम बाणी है। प्रभु की कृपा-दृष्टि जिन पर हो जाती है उनके हृदय-घर में पावन बाणी समा जाती है। श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है :

आवहु सिख सतिगुरु के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरु केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥
पीवहु अंम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥
(पन्ना ९२०)

वाहिगुरु रहमत करें! हम भी निरंकार रूप अलाही बाणी को पढ़-सुन कर अपना अमूल्य एवं दुर्लभ जीवन सफल बना सकें।

प्राकृतिक स्रोतों को प्रदूषित होने से बचायें!

(पृष्ठ ३९ का शेष)

चौगिर्दे के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगा।

हवा : गुरबाणी में हवा को 'गुरु' का दर्जा दिया गया है। हवा के कारण ही हम जीवित हैं। हमें ऐसे प्रदूषण को खत्म करना पड़ेगा जो हवा को दूषित करता है। कार या स्कूटर को समय से पहले स्टार्ट नहीं करना चाहिए। लोकल बसों और ऑटो रिक्शा में सी. एन. जी. इस्तेमाल करनी चाहिए, जैसे कि दिल्ली शहर में है और इसी लिए वहां अब प्रदूषण काफी सीमा तक कंट्रोल में है।

अत्यधिक शोरगुल भी हानिकारक प्रदूषण है। इसका संबंध कानों की बीमारियों, ब्लड् प्रेशर, हाईपरटेंशन आदि से है। देखने में आया है कि शादियों और धार्मिक स्थानों पर लाऊड-स्पीकर या डी. जे. काफी ऊंची आवाज़ में बजते हैं। छात्र वर्ग के लिए बहुत ही मुश्किल हो जाती है। परीक्षा के समय तो लाऊड-स्पीकरों के शोर के कारण उनको कुछ भी याद नहीं होता।

विदेशों में तो प्रेशर हार्न का प्रयोग अत्यंत संकोच के किया जाता है। सरकार प्रेशर हार्न बनाने वाली कंपनियों को दिशा-निर्देश दे कि वे ज्यादा ऊंची आवाज़ वाले हार्न बनाना बंद करें।

❂ ज़हरीली दवाइयों का फसलों पर जो छिड़काव किया जाता है, उनका इस्तेमाल कम होना चाहिए। इन ज़हरीली दवाइयों के कारण ही ग्लोबल वार्मिंग हो रही है, जिसके फलस्वरूप मौसम में बहुत तबदीली आई है, जो पूरे ब्रह्मांड के लिए नुकसानदेय है।

वरमीकंपोस्ट और आर्गेनिक कृषि पर ज्यादा से ज्यादा ज़ोर देना चाहिए। इससे धरती के नीचे का पानी दूषित नहीं होगा और ग्लोबल वातावरण का तापमान भी स्थिर रहेगा। हम सभी का फर्ज़ बनता है कि प्राकृतिक स्रोतों की संभाल करें। हमें विश्व-प्रसिद्ध वातावरण-प्रेमी बाबा बलबीर सिंघ सीचेवाल सरीखे सज्जनों द्वारा बनाई राह पर चलना होगा, फिर ही हम ज़िंदगी में आ रही मुश्किलों पर काबू पा सकते हैं और ज़िंदगी में आनंद ले सकते हैं।



कविताएं

समग्र जीवन-सूत्र

जीवन के कण-कण में हो अब, पावनता का नित्य निवास।
मिले प्रेरणा सत्कर्मों की, बढ़ता जाए सद्विश्वास ।
आत्मखोज का यही प्रथम पग, श्रेष्ठ कर्म का करो प्रयास।
पथ आगे का तभी दिखेगा, कभी न छोड़ो जीत की आस।
हार-हार कर भी जीतेंगे, खुद में हो सुदृढ़ विश्वास।
गिर-गिर कर फिर उठ जाएंगे, नहीं बनेंगे मन के दास।
व्यर्थ नहीं अब जाने देंगे, जीवन की कोई भी श्वास।
अच्छे कर्म करेंगे प्रतिक्षण, हाथ हमारे भाग्य की रास।
समझा सरल गणित जीवन का, मन में छाया है उल्लास।
व्यर्थ गंवाता दुर्लभ जीवन, जिसका ध्येय बस भोग-विलास।
केवल दूषित चिंतन से तब, होता संस्कारों का ह्रास।
बुरे काम से सोचो कितना, पायेंगे जीवन में त्रास?
निष्ठा रखें भलाई में, करें सद्चिंतन का अभ्यास।
पात्र स्वतः सद्गति के होंगे, बनेंगे जब हम काल का ग्रास।



आसक्ति से बंधन

जब तक हमको सपना दिखता, तब तक वो सच लगता है।
जगने पर ही उसके मिथ्यापन का ज्ञान जगता है।
ऐसे ही यह जगत्-स्वप्न, अज्ञान-नींद में सच लगता है।
ज्ञान-दृष्टि के जगने पर, यह मिथ्याभास नहीं टिकता है।
सपना चाहे झूठा हो पर, सुख-दुख अनुभव होता है।
मिथ्या में आसक्त हुआ नर, हंसता है या रोता है।
हर सपने का बीज छिपा है, मानव के अवचेतन में।
सपने में वह वृक्ष-रूप में, जकड़ा करता बंधन में।
इसी तरह मन में रखते, आसक्ति और इच्छाएं हम।
उनके बंधन में पड़कर, लेना पड़ता है पुनः जन्म।
पिछले लेन-देन के कारण, रिश्ते-नाते में फंसते।
लेकिन 'मैं-मेरा' में पड़कर, पुनः नए बंधन कसते।
करना है कर्त्तव्य-कर्म बस, वह भी अनासक्त-निष्काम।
तब बंधन से मुक्ति मिलेगी, तभी बनेंगे महामहान।



-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); मो : ०९४११६०७६७२

गुर सिखी बारीक है. . .२९

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

गुरसिक्ख गुरु के घर, गुरु की शरण का याचक बनकर जा पहुंचे तो दयालु, कृपालु सतिगुरु उसे अपनी कृपा की बारिश से निहाल-निहाल कर देते हैं और उसके जन्मों-जन्मांतरों के पाप कर्मों, भूलों को क्षमा करके इस तरह अपने गले लगा लेते हैं कि वह लोहे से सोना हो जाता हैं। जिस तरह सोने के अपने लक्षण हैं वैसे ही गुरसिक्ख के अपने लक्षण हैं जो उसे अन्य से भिन्न करते हैं। जैसे सोने को उसके रंग और चमक से दूर से ही पहचान लिया जाता है वैसे ही सतिगुरु की शरण और कृपा-प्राप्त गुरसिक्ख अपने आचरण से पहचाना जाता है।

एक गुरसिक्ख वह है जो विनम्र हो गया है। उसकी विनम्रता का बीज सतिगुरु की कृपा से अंकुरित होता है।

मुरदा होइ मुरीद सोइ को विरला गुरि गोरि समावै।
पैरी पै पा खाकु होइ पैरां उपरि सीसु धरावै।
(वार २८:१६)

जो सही अर्थों में विनम्रता है उसे धारण करना अत्यंत कठिन है और हज़ारों-लाखों में कोई एक ही उस अवस्था तक पहुंच पाता है। भाई गुरदास जी ने स्पष्ट किया है कि स्वयं की सारी कामनाएं-इच्छाएं त्यागकर सतिगुरु की भक्ति करने वाला जो सतिगुरु के चरणों को ही अपने जीवन का निवास और सतिगुरु की आज्ञा को ही अपना वेश बना ले, वही गुरसिक्ख है। ऐसा गुरसिक्ख स्वयं को सतिगुरु के चरणों की धूलि समझता है। इस सोच को धारण करने से वह धर्म के मार्ग पर चलने वाले सभी लोगों के प्रति भी विनयशीलता धारण कर लेता है। यह एक निराला आचरण है जिसकी आशा एक गुरमुख से ही की जाती है। इस कठिन अवस्था को वह पा लेता है।

चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥
लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥
(पन्ना ९१८)

उपरोक्त अमूल्य वचन श्री गुरु अमरदास जी का है जिन्होंने श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा करते हुए स्वयं के आचरण से विनम्रता के शिखर को छू लिया था और आचरण का ऐसा मानदंड स्थापित कर दिया था जिससे सिक्खी की शान जगत में सबसे ऊंची और शोभामयी हो गयी। गुरु-वचन के अनुसार कठिन मार्ग पर चलना ही तो गुरसिक्खी की विशेषता है। एक गुरसिक्ख ही है जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का त्याग कर देता है ताकि वह इस कठिन मार्ग पर चल सके जो खड़ग की धार से भी तीखा और बाल की मोटाई से भी कम है। वह अपना सब कुछ त्याग देता है और इस महान त्याग का गर्व उसे छू तक नहीं पाता।

**E-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७; मो : ९४१५९६०५३३*

उसे इस श्रेष्ठ अवस्था का रंचमात्र भी गुमान नहीं होता। इस तरह वह परमात्मा को पा लेता है और परमात्मा की दृष्टि का धारणी हो जाता है। मन में विकारों का न होना, स्व का लुप्त हो जाना ही विनम्रता की अवस्था है। भाई गुरदास जी ने कहा है कि महज बातों से ही यह अवस्था नहीं प्राप्त हो जाती :

मुरदा होइ मुरीदु न गली होवणा।
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।
(वार ३:१८)

स्व को मिटाकर संतोष धारण करने वाले को भाई गुरदास जी ने बलिदानी, त्यागी की संज्ञा दी जिसके सारे भ्रम, सारी शंकाओं और भय का निवारण हो जाता है। बातों से ही कोई गुरसिक्ख नहीं बन सकता। इसे समझाने के लिए भाई गुरदास जी ने अनार के दाने, गन्ने और सोने का उदाहरण दिया है। अनार का दाना धरती में धंसकर मिट्टी में अपने अस्तित्व को खो देता है। इसके बाद ही वह हरा-भरा वृक्ष बनता है जिसमें कितने ही फूल और फल लगते हैं और एक-एक फल में कितने ही दाने। सभी दानों में वही मिठास है, जो स्वयं को धरती में खो देने वाले उस एक दाने में थी। जितने ही फल तोड़ लिए जाते हैं उतने ही लग जाते हैं। एक मिठास हज़ारों-लाखों मिठास में बदल जाती है, किंतु तब जब एक दाना अपने को मिटाकर धरती में समा जाता है। गन्ने का दृष्टांत देते हुए भाई साहिब ने कहा कि गन्ने के खेत में कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती और न ही कुछ दिखता है फिर भी गन्ना रस से भरा हुआ होता है। गन्ने के मुख को नीचे करके बोया जाता है फिर भी वह पैर ऊपर करके उग आता है। जब उसके टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें पीसा जाता है तो उनसे मीठा रस ही निकलता है। हर अवस्था में हर किसी को मिठास देना ही गन्ने की विशेषता है। सोने की धातु का उदाहरण भी समझ को पुष्ट करने का सटीक वर्णन है। सोना रेत से निकाला जाता है। उसके कणों को एकत्र करके ठोस पिंड बनाया जाता है। इस पिंड को सुनार पतरों में बदलता है और बार-बार धोता है। फिर इनमें रासायन लगाकर आग में तपाता है। इस तरह कूट-पीटकर, आग में तपकर शुद्ध सोना तैयार होता है और अपनी आभा बिखेरता है। विनम्रता को धारण करना भी शुद्ध सोना बनने जैसा है जिसके लिए खुद को कूटना, पीसना और तपाना पड़ता है ताकि विकार परे हो जाएं, स्व मिट जाए और परमात्मा के नाम का सच्चा रंग चढ़ सके। गुरसिक्खी का मार्ग इसी लिए खड़ग से भी तीक्ष्ण धार वाला और बाल से भी बारीक है, क्योंकि इस पर चलने के लिए अनार के दाने की तरह स्व को मिट्टी में मिला देना, गन्ने की तरह विकारों का पिस-कुचल जाना, सोने की तरह अंतर का धुल-धुलकर साफ और गुरु-ज्ञान से तप-तपकर शुद्ध हो जाना है। इससे विनम्रता का जो भाव प्राप्त होता है उससे गुरसिक्ख ही नहीं लाभान्वित होता, कुटुंब, समाज का भी उद्धार हो जाता है। विनम्रता धारण किए बिना परमात्मा मिलता भी नहीं।

हरि भइओ खांडु रेतु महि बिखरिओ हसती चुनिओ न जाई ॥
कहि कमीर कुल जाति पांति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥ *(पन्ना ९७२)*

परमात्मा तो खांड बनकर रेत में बिखरा पड़ा है। उसे चुनने के लिए चींटी बनना ही पड़ेगा। हाथी (अहंकार-विकारों में फूला हुआ मनुष्य) कैसे परमात्मा की कृपा पा सकता है? गुरसिक्ख चींटी जैसा तुच्छ बनकर परमात्मा

को पाता है। जैसे चींटी को किसी भी बात का गुमान नहीं वैसा ही गुरसिक्ख हो जाता है। सारा संसार उसे अपना मित्र लगने लगता है।

काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥
सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥१॥
जनम मरन चूके सभि भारे ॥
मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥१॥ रहाउ ॥
सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥
सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥२॥ (पन्ना ३७९)

विकार जीवन को निष्फल बना रहे थे। गुरसिक्ख सत, संतोष, दया, धर्म और सच को अपने अंतर में स्थान देकर सारे संकटों से उबर जाता है। परमात्मा की शरण में आते ही उसका मन निर्मल हो जाता है और पल भर में ही उसके जीवन की दिशा बदल जाती है। विकार रहित उसका मन विनम्र होकर सबके हित की सोचने लगता है और स्वयं को सबसे निम्न समझने लगता है। उसे सारी सृष्टि में परमात्मा के दर्शन होने लगते हैं और प्रेरणा मिलती है कि किस तरह परमात्मा सभी का पोषण, संरक्षण कर रहा है।

खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥
नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥
(पन्ना २६०)

विनम्रता मनुष्य को सच्चे सुख से भर देती है और मन व तन दोनों ही स्वस्थ हो जाते है अर्थात् परमात्मा के अनुकूल हो जाते हैं। गुरसिक्ख का मन-तन आरोग्य हो गया है। इसको जांचना हो तो शेख़ फरीद जी के इस सलोक पर अवश्य विचार करना चाहिए :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥६॥
फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥७॥
(पन्ना १३७८)

कोई भी ऐसा काम न करें कि धर्म आहत हो। हर कार्य खुद को निम्न जानते हुए विनम्रता के भाव से करें। कोई कितना भी अहित करे, सहज अवस्था में कायम रहें तथा कोई प्रतिकार न करें। ऐसी स्थिति को प्राप्त करने वाला ही विनम्र है। यह एक खरी कसौटी है गुरसिक्ख कहलाने की और गुरसिक्खी पर दृढ़ रहने की।

विनम्रता को धारण करने वाला जब भी बोलेगा मीठा और आनंदित कर देने वाले वचन ही बोलेगा। मीठा बोलना गुरसिक्ख की दूसरी प्रमुख निशानी है। विनम्र ही मीठे वचन बोलने वाला हो सकता है। आचरण शुद्ध हो तो रसना भी शुद्ध होगी। रसना शुद्ध नहीं तो आचरण भी शुद्ध नहीं होगा। प्राय: सुनने में आता है कि बोली ठीक नहीं तो क्या, मन तो साफ है। यह स्वयं के दुर्गुण को छिपाने का सबसे बड़ा कुतर्क है। मन प्रकट नहीं है, शब्द प्रकट हैं। प्रभाव मन नहीं दे रहा, शब्द दे रहा है। गुरु नानक साहिब ने इस कुतर्क को सिरे से नकारते हुए सचेत किया है :

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥
फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥
(पन्ना ४७३)

वाणी शुद्ध न हो तो वह तन-मन अर्थात्

समूचे अस्तित्व को प्रभावित करती है। बुरे शब्दों का प्रयोग करने वाला न तो तन से स्वस्थ रह सकता है, न ही मन से। बुरे शब्द मन पर प्रभाव डालते हैं और तन भी वैसे ही कर्म करने के लिए प्रेरित होता है। इससे कहीं भी ठौर नहीं मिलता और इसका फल भुगतना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को गुरु साहिब ने बुद्धिहीन कहा है। गुरसिक्ख हमेशा मीठे बोल बोलता है :

मीठा बोले अंम्रित बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥
निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥२॥ (पन्ना ८५३)

मीठा बोल बोलने वाले की सुरति सदा परमात्मा में लगी रहती है और वह विनम्र होकर सहज अवस्था में बना रहता है। ऐसे गुरमुख से मिलने पर सदा दूसरों को सुख प्राप्त होता है। संसार और जीवन इस तरह है कि भिन्न प्रकार के लोग मिलते रहते हैं और भिन्न स्थितियों के रूबरू होना पड़ता है, इसलिए रसना का प्रयोग अहम हो जाता है। गुरसिक्ख को पता है कि कब क्या बोलना है और कैसा बोलना या नहीं बोलना है :

संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥
मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥१॥
बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥
जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥
संतन सिउ बोले उपकारी ॥
मूरख सिउ बोले झख मारी ॥२॥
बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥
बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥३॥
कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥
भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥४॥
(पन्ना ८७०)

उपरोक्त अनमोल वचन में भक्त कबीर जी वाणी की बड़ी गूढ़ व्याख्या सहज ही कर गए हैं। वाद-विवाद करना मनुष्य की आम वृत्ति है। अपनी बात को कहना और मनवाना उसका स्वभाव है। भक्त कबीर जी ने ऐसे मनुष्य को खाली घड़े की संज्ञा दी है जो बजाने पर ऊंचा बजता है। भरे हुए घड़े को बजाने पर कोई आवाज़ नहीं होती। इसी तरह धीर, गंभीर, सूझवान, गुणवान मनुष्य कभी भी न तो व्यर्थ की बात करता है और न ही बढ़-चढ़कर कोई बात कहता है। वह ऐसी ही वार्ता करता है जिससे परमात्मा में उसकी प्रीति और विश्वास दृढ़ होता जाए। अपशब्दों का प्रयोग करने के स्थान पर वह मौन रहना पसंद करता है। ऐसे ही बोल बोलने चाहिए जिनसे परमात्मा का प्रेम मन में बसा रहे। व्यर्थ के बोल विकारों को जन्म देते हैं।

गुरसिक्ख विनम्रता में रहता है, मीठा बोलता है, तो मुख्यतः उसका आत्मिक विकास होता है। वह अन्य की परवाह भी करता है और परोपकार में भी व्यस्त रहता है :

पिछल रातीं जागणा नामु दानु इसनानु दिड़ाए।
मिठा बोलणु निव चलणु हथहु दे कै भला मनाए। (वार २८:१५)

गुरसिक्ख का तीसरा प्रमुख लक्षण आगे बढ़कर मदद करना और दूसरों के मंगल की कामना करना है। श्री गुरु नानक साहिब ने मानवता के कल्याण के लिए एक कोने से दूसरे कोने तक चारों दिशाओं की चार महान धर्म-यात्राएं (उदासियां) कीं, जिनमें बारह वर्ष से अधिक का समय लगा। वे सद्गृहस्थ थे। उन्होंने परिवार और समाज का त्याग नहीं किया था, फिर भी परिवार से कुछ समय अलग रहे तो लोगों के उद्धार के लिए। श्री गुरु नानक साहिब के इस मिशन को अन्य सभी गुरु साहिबान ने जारी रखा। लंगर की परंपरा ने

व्यवस्थित रूप लिया; समाज-सुधार के कार्यक्रम चले। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत से आरंभ हुआ बलिदानों का क्रम श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक पहुंचते-पहुंचते इतिहास के अमिट सुनहरे पन्नों में बदल गया। ये शहादतें लोक-रक्षा और मानवीय मूल्यों के लिए थीं। एक ऐसी इबादत लिखी गई जो पूरी दुनिया को हैरान कर देने वाली थी।

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहुं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करों ॥
अरु सिखहों आपने ही मन को इह लालच हउ गुन तउ उचरों ॥
जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरों ॥ *(दसम ग्रंथ)*

हमें इस भ्रम में कदापि नहीं रहना चाहिए कि यह कोई युद्ध-गीत है जो सेना को रण-क्षेत्र में जूझ मरने हेतु प्रेरित करने के लिए किसी सेनापति ने रचा है। इसमें जिन शुभ कर्मों की बात की गयी है वे *"हथहु दे कै भला मनावै"* की संकल्प-शक्ति को ही दुहराते हैं। इसमें प्रयुक्त शब्द *"न डरो"* किसी सैनिक का निर्भीक होना नहीं *"साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा"* को प्रकट करता है। शुभ कर्म करने की बात उसके लिए की गई है जिसने विकारों का त्याग कर महान बलिदानी-शहीद का पद प्राप्त कर लिया है और अपने संतोष व सिमरन से सारे भ्रमों तथा भय से मुक्ति पा ली है; भय-मुक्त हो गया है। ऐसा गुरसिक्ख परहित के लिए अपने जीवन की भी परवाह नहीं करता :

अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥
पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥२॥
साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥
अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥
(पन्ना २१८)

अवगुणों, विकारों को मिटाने से बड़ा परोपकार और कोई नहीं है। जो विकारों को मिटाने में सहायक हो वही सखा, भाई, मीत है। परमात्मा का नाम मन में बसाकर ही अपना तथा दूसरों का उद्धार किया जा सकता है। किसी को विकार रहित करके परमात्मा से जोड़ देना सबसे महान उपकार है। इससे कौम और समाज का भला होता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गोदावरी नदी के किनारे माधोदास बैरागी की सारी शंकाओं का निवारण करके बाबा बंदा सिंघ बहादर बना दिया, जिसने मामूली टोटके छोड़कर अपनी तेग से ऐसे कमाल दिखाए कि जुल्म करने वालों के हौसले पस्त हो गए और समाज में स्थिरता लौट आई। सिक्ख का परोपकार, उसका शुभ कर्म है यह कि वह पहले तो स्वयं इस योग्य बने कि विकारों को तजकर, स्व को मिटाकर सहज विनम्रता को धारण कर ले। उसकी रसना में मिठास और परोपकार की उमंग आ जाए। *"ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा"* अर्थात् उमंग में भरकर वह अन्य के मन के विकारों को दूर करने और उन्हें परमात्मा से जोड़ने में सहायक बने। इसके लिए वह बड़े से बड़े बलिदान को तैयार रहे। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत ने जहां मुगलों-षड़यंत्रकारियों के दिल में दहशत पैदा की कि धर्म की मर्यादा अभी जीवित है, वहीं सिक्खों में भी उत्साह पैदा किया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के बाद दिल्ली में ही भाई लक्खी शाह के हाथों उनकी पावन देह का दाह संस्कार होना मुगल सलतनत के

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : १३

स. ईशर सिंघ 'मझैल'

*-स. रूप सिंघ**

धर्म, कौम व देश का दर्द समझने वाले, धार्मिक-राजनीतिक रुचि रखने वाले, सफल वक्ता व लिखारी, श्रद्धावान, धैर्यवान सिक्ख स. ईशर सिंघ 'मझैल' का जन्म जनवरी, १९०१ में स. आसा सिंघ तथा माता बसंत कौर के घर मध्यवर्गीय किसान परिवार में गांव सराय अमानत खां, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। माता-पिता गुरसिक्खी जीवन जीने वाले धर्मी इंसान थे, जिस कारण आप जी के धर्मी जीवन की प्रतिमा तराशी गई। ये अभी ढाई वर्ष की बाल्यावस्था में ही थे कि इनके पिता जी परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना ले समाटरा (इंडोनेशिया) चले गए। कुदरत को कुछ और ही मंज़ूर था। थोड़े समय के बाद ही इनके पिता जी वहां अकाल चलाना कर गए। अक्षर-ज्ञान आप जी ने अपने गांव के स्कूल से प्राप्त किया। पारिवारिक-आर्थिक मज़बूरियों तथा बीमारी के साथ संघर्ष करते हुए आप जी ने दसवीं कक्षा का इम्तिहान १९२२ ई में मालवा खालसा हाई स्कूल, लुधियाना से पास किया। मालवा क्षेत्र के इस स्कूल में माझा क्षेत्र के मात्र आप ही एक विद्यार्थी थे, जिस कारण इनके नाम के साथ 'मझैल' शब्द स्थाई रूप से जुड़ गया। दसवीं कक्षा पास करते ही इनको कोकरी कलां, ज़िला फिरोज़पुर के मिडल स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गई। इस समय गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर यौवन पर थी। इस कारण इन्होंने अध्यापक की सेवा करने से धर्म, कौम तथा देश की सेवा करना उचित समझा और निष्काम सेवक के रूप में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में शामिल हो गए। गुरु का बाग के मोर्चे में शामिल होने के कारण आपको पहली बार छः महीने कैंबलपुर जेल में गुज़ारने के लिए बंद कर दिया गया। मोर्चा सफल होने के कारण सरदार साहिब तीन महीने के बाद ही कैद से आज़ाद हो गए।

इनके सफल प्रवक्ता होने तथा इनकी प्रभावशाली शख़्सियत को सम्मुख रखते हुए शिरोमणि अकाली दल के अगुओं ने आप जी को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की प्रचार मुहिम में शामिल कर लिया। १९२४ ई में गंगसर जैतो मोर्चे के समय अंग्रेज सरकार ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल को गैर-कानूनी संस्थाएं करार दे दिया। आप जी ने इस मोर्चे के समय भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिस कारण इनको दो वर्ष जेल में कैदी के रूप में गुज़ारने पड़े। जेल से रिहा होकर आप जी फिर कौम-सेवा में जुट गए।

१९२७ ई में देश-भक्त परिवार सेवक कमेटी की ओर से बाबा वसाखा सिंघ के साथ आप जी को देश-भक्तों के लिए सहायता एकत्र करने हेतु बर्मा जाने का मौका मिला। शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा अक्तूबर, १९२७ ई में आरंभ किया गया तो आप जी प्रचारक का दो-वर्षीय

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. ९८१४६-३७९७९*

कोर्स करने के लिए विद्यार्थी बन गए। १९३० ई में किसान आंदोलन में शामिल होने के कारण इनको छः महीने की कैद हुई परंतु पढ़ने-लिखने की रुचि ने इनकी यह कैद एक वर्ष और बढ़ा दी। कारण, जेल में उस समय अख़बार पढ़ने की मनाही थी तथा मझैल साहिब अख़बार पढ़ते हुए पकड़े गए थे। गुरुद्वारा शहीद गंज साहिब, लाहौर के मामले में इन्होंने बहुत ही निपुण भूमिका निभाई। सिक्खी में 'कुट्ठे' को बज्जर कुरहित माना गया है। १९३७ ई में सिक्खों द्वारा 'झटके' के प्रचार के समय मुसलिम बहुसंख्या ने रावलपिंडी में दंगा-फसाद कर दिया। उस समय स. ईशर सिंघ 'मझैल' तथा बाबा खड़क सिंघ जी ने जिस निडरता तथा दिलेरी से जख़्मी दो गुरसिक्खों को मुसलमानों से छुड़वाया, वो एक मिसाल है।

१८ जून, १९३३ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का जनरल इजलास स. गोपाल सिंघ कौमी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें स. ईशर सिंघ 'मझैल' श्री दरबार साहिब कमेटी के सदस्य चुने गए। सिक्ख नेशनल कॉलेज, लाहौर १९३८ ई में शुरू किया गया तो आप जी को इसके प्रथम सचिव होने का गौरव प्राप्त हुआ। विद्या-प्रेमी होने के कारण इन्होंने अपने क्षेत्र में विद्या-प्रसार के लिए गांव गंडीविंड में खालसा हाई स्कूल खुलवाया। स. ईशर सिंघ जत्थेदार ऊधम सिंघ 'नागोके' को अपना राजनीतिक उस्ताद मानते थे। यही कारण है कि द्वितीय विश्व-युद्ध के समय इन्होंने कांग्रेस की नीति का समर्थन करते हुए विश्व-युद्ध में सहायता तथा साथ देने से साफ इंकार कर दिया।

१९४०-४१ ई में आप जी श्री दरबार साहिब कमेटी, श्री अमृतसर के मुखिया चुने गए। इनकी कोशिशों के कारण गुरु रामदास लायब्रेरी अस्तित्व में आई, जो निरंतर कार्यशील है। १९४२ ई में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आंदोलन के समय कांग्रेस पार्टी का साथ देने के कारण इनको 'डीफेंस ऑफ इंडिया' एक्ट के तहत फिर जेल-यात्रा करनी पड़ी। १९४४ ई में जंडियाला, ज़िला जलंधर में इनको अकाली कान्फ्रेंस की अध्यक्षता करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मझैल साहिब १९४६ ई. में पंजाब विधान सभा के लिए पहली बार सदस्य चुने गए तथा देश-विभाजन के बाद गोपी चंद भार्गव की सरकार के मंत्री बने। १९४७ ई. में देश-विभाजन के समय निर्दोषों के हुए कत्लेआम तथा गुंडागर्दी ने इनके मन पर गहरा असर किया। मानवीय जीवन-मूल्यों को बनाये रखने में मझैल साहिब ने निरंतर यत्न किए तथा निर्दोषों, मासूमों एवं मज़लूमों की इन्होंने खूब सहायता व सेवा की। १९५२ ई. में ये दोबारा पंजाब विधान सभा के लिए चुने गए तथा पुनर्वास एवं सहायता, सिविल सप्लाई, इंडस्ट्री, वन विभाग तथा कृषि आदि मंत्रालयों के मंत्री बने।

स. ईशर सिंघ 'मझैल' २५ मई, १९४८ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य नामज़द हुए। ६ मार्च, १९४९; १३ नवंबर, १९४९; १६ फरवरी, १९५०; १ मार्च, १९५१; २८ जून, १९५२; ५ अक्तूबर, १९५२ को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के हुए जनरल इजलास के समय आप जी बतौर नामज़द सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी हाज़िर होते रहे। १९४८ ई. में आप रोज़ाना

अख़बार 'वरतमान' के संपादक बन गए। इन्होंने दो पुस्तकें 'सिक्ख ते कमिऊनिसट' तथा 'कमिऊनिसट हिंदोसतानी नज़रां विच' लिखीं व प्रकाशित करवाईं। १९४९ ई. में आप सेंट्रल को-ऑप्रेटिव बैंक, पटियाला के मुखिया बने।

६ मार्च, १९४९ ई को जनरल इजलास के समय स. ईशर सिंघ 'मझैल' द्वारा मास्टर तारा सिंघ जी की पार्टी पर गुरुद्वारा साहिब के अपमान का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। पिछड़ी श्रेणियों का एक वफ़द १५ अगस्त, १९४९ ई को इनकी अगुआई में स. पूरन सिंघ गृह मंत्री (ईस्ट) पंजाब को श्री अमृतसर में मिला तथा पिछड़ी श्रेणियों के साथ हो रही ज्यादतियों की तरफ सरकार का ध्यान दिलवाया।

आप जी ने ४ मार्च, १५५१ ई. को जनरल समागम के समय कहा, "मैं आपके सामने बहुत ही अहम मुद्दा रखना चाहता हूं। मैं यहां बतौर वज़ीर नहीं, बतौर सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर हाज़िर हुआ हूं। भाषा का झगड़ा अब का नहीं पिछली जनगणना के समय भी यह झगड़ा था। मुझे याद है कि गांव मानोचाहल के (तथाकथित) जुलाहे अपनी भाषा अरबी बताते थे, किंतु अभी भी हमारे देश में दीन-ईमान रखने वाले गैर-सिक्ख भाई मौजूद हैं, जो खुलेआम कहते हैं कि हमारी मातृ-भाषा अर्थात् जुबान पंजाबी है।" ४ नवंबर, १९५१ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल इजलास के समय इनकी तजवीज़ तथा ११-सदस्यीय कार्यकारिणी सर्वसम्मति से चुनी गयी।

५ दिसंबर, १९५२ ई को स. ईशर सिंघ 'मझैल' सदस्य कार्यकारिणी, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। १८ जनवरी, १९५४ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का विशेष जनरल इजलास बुलाया गया जिसमें पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के सदस्यों के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित किया गया। नये अध्यक्ष के चुनाव के समय इसी दिन स. महिंदर सिंघ सिधवां की तजवीज़ पर स. ईशर सिंघ 'मझैल' अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। ७ मार्च, १९५४ ई को इनकी अध्यक्षता में वार्षिक बजट का इजलास हुआ जिसमें ८९ सदस्य हाज़िर थे। वर्ष १९५४-५५ का बजट पेश होने पर १६,१३,९८१/- रुपए का आमदन-खर्च का बजट पास किया गया।

२८ दिसंबर, १९५२ को ये कार्यकारिणी के नोटिस में लाये कि पाठ एवं कीर्तन के समय लाऊड स्पीकर का प्रयोग फैशन के रूप में किया जा रहा है। इससे गुरबाणी का उतना सत्कार नहीं होता जितना होना चाहिए। प्रस्ताव पेश होने पर प्रवान हुआ कि प्रेरणा की जाए कि लाऊड स्पीकर का प्रयोग तभी किया जाए जब श्रोता ज्यादा हों। तब तक स्पीकर न लगाया जाए, जब तक आवाज़ श्रोताओं तक न पहुंचती हो।

१७ अक्तूबर, १९५४ ई. को वार्षिक जनरल इजलास स. ईशर सिंघ 'मझैल' की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें ८३ सदस्य हाज़िर थे। इजलास के समय सबसे पहले स. भाग सिंघ एडवोकेट 'गुरदासपुरी' के अकाल चलाना कर जाने पर शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। फिर पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के चुनाव के समय स. जोगिंदर सिंघ शांत की तजवीज़ पर प्रवान हुआ कि अगले वर्ष के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मौजूदा पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी के सदस्य कायम

रहें। यह तजवीज़ सर्वसम्मति से प्रवान हो गयी। इस एकत्रता में महत्त्वपूर्ण फैसला किया गया कि धर्म व सियासत एक-दूसरे से अलग हैं। शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज दोबारा खोलने, श्री गुरु रामदास संगीत विद्यालय तथा मध्य प्रदेश प्रचार मिशन आरंभ करने जैसे महत्त्वपूर्ण फैसले किए गए। ७ फरवरी, १९५५ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल इजलास के समय मास्टर तारा सिंघ जी फिर अध्यक्ष चुने गए। इस प्रकार स. ईशर सिंघ 'मझैल' का अध्यक्षता कार्यकाल इसी दिन समाप्त हो गया।

ज़िंदगी के अंतिम वर्ष इन्होंने सक्रिय सिक्ख राजनीति से सन्यास ले, पटियाला में अपने कृषि फार्म पर गुज़ारे। कुछ समय बीमार रहने के उपरांत २० अप्रैल, १९७७ को ये परलोक गमन कर गए। १५ मई, १९७७ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा पारित प्रस्ताव नं. ३३२-अ के अनुसार "स. ईशर सिंघ 'मझैल', पूर्वाध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अकाल चलाना कर जाने पर जनरल हाऊस गहरे दुख तथा शोक का प्रकटावा करता है।" इनके द्वारा पंथ तथा देश के लिए की गई कुर्बानियों की प्रशंसा करते हुए शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। इनकी तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय, श्री अमृतसर में सुशोभित है। जत्थेदार मझैल का एक सुपुत्र सुनाम के समीप कृषि फार्म में मसरूफ है तथा दूसरा सुपुत्र जलंधर में निवास करता है। जत्थेदार ईशर सिंघ 'मझैल' के जीवन तथा कार्यों को रूपमान करता खूबसूरत 'अभिनंदन ग्रंथ' भी प्रकाशित किया गया था।



गुर सिखी बारीक है. . . २९ *(पृष्ठ ५० का शेष)*

अन्याय के जबरदस्त आतंक की एक अदने सिक्ख के हाथों करारी हार थी। गुरु साहिब की शहादत ने भाई लक्खी शाह को किस आत्मिक उच्चता पर पहुंचा दिया होगा कि वो गुरु साहिब की पावन देह को होशियारी से अपने घर तक ले जा पाए और घर-बार की परवाह किए बिना आग लगाकर भस्म कर दिया ताकि गुरु साहिब की पावन देह का अंतिम संस्कार हो सके। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो बलिदानों का अभूतपर्व इतिहास रचा जिसे चंद शब्दों अथवा पन्नों में बयान नहीं किया जा सकता। बस, ननकाणा साहिब से लेकर नांदेड़ साहिब तक हवा में फहराते हुए निशान साहिब की शान को देखकर महसूस किया जा सकता है। ये उस कौम के निशान साहिब हैं जिसे समूचा खत्म कर देने का दुस्साहसिक सपना देखा गया था।

एक गुरसिक्ख का सबसे बड़ा शुभ कर्म या परोपकार है दूसरों को सतिगुरु से जोड़ना, किंतु ऐसा करने के लिए पहले स्वयं को विकार-रहित, विनम्र-सहज, मिठबोलड़ा बनाना होगा; सतिगुरु में समा जाना होगा, ताकि स्व लुप्त हो जाए। आज गुरसिक्खी की बात करने के लिए ऐसे लोग चाहिए हो *"मुरदा होइ मुरीदु"* का अर्थ जानते हों और *"न गली होवणा"* में विश्वास करते हों। इस हेतु सतिगुरु की कृपा चाहिए :

बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥



ख़बरनामा

कनाडा के राज्य क्यूबेक की सरकार धार्मिक चिन्हों पर पाबंदी न लगाए

श्री अमृतसर : १२ सितंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा है कि कनाडा के राज्य क्यूबेक की सरकार द्वारा विभिन्न धर्मों को ठेस पहुंचाने वाला विवादित बिल विधान सभा में पेश करके उनके धार्मिक चिन्हों पर पाबंदी न लगायी जाए। उन्होंने कहा कि क्यूबेक राज्य की सरकार इस बिल को पारित करवाकर वहां बसते (अल्पसंख्यक) सिक्खों तथा अन्य धर्म के लोगों की विरोधता लेने की बजाए अपने राज्य के विकास की तरफ ध्यान दे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण बिल के लागू होने से सिक्खों तथा अन्य धर्म के लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत होंगी। उन्होंने कहा कि यह बहुत बुरा होगा कि इस बिल के लागू होने के बाद कनाडा का कोई भी सिक्ख दसतार सजाकर ड्यूटी पर नहीं जा सकेगा तथा सिक्ख बच्चे दसतार सजाकर या ककार पहनकर स्कूल नहीं जा सकेंगे, इसलिए इस लोक विरोधी बिल को पारित होने से पहले ही रोक देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि दशमेश पिता द्वारा बख़्शिश ककार किसी भी अमृतधारी सिक्ख के लिए अपने शरीर से अलग करना संभव नहीं हैं। इसी तरह दसतार सिक्खों की पहचान (ड्रेस-कोड) है तथा उनकी शान की प्रतीक है। दसतार के बिना सिक्खों का रहना नामुमकिन है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने इतिहास की याद दिलाते हुए कहा कि द्वितीय विश्व-युद्ध के समय दुनिया में हर जगह बसते सिक्खों ने अपना रिवायती पहरावा (दसतार) सजाकर ही यूरोप के विभिन्न देशों के लिए कुर्बानियां की थीं। किसी भी देश को दसतार या ककारों पर पाबंदी लगाने से पहले द्वितीय विश्व-युद्ध का इतिहास अवश्य पढ़ लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के लिए की गई कुर्बानियों के बदले मान-सम्मान देने की बजाए कुछ देशों में सिक्खों की दसतार तथा ककारों पर पाबंदी लगाकर उन्हें अपमानित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंघ कनाडा सरकार के साथ बात करके वहां के क्यूबेक राज्य की सरकार द्वारा लाए जा रहे इस काले कानून को तुरंत रुकवाएं।

केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय की एलबम लोकार्पण की गयी

श्री अमृतसर : २४ अगस्त : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिक्ख इतिहास को रूपमान करती केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय सम्बंधी श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर द्वारा प्रकाशित की गयी एलबम का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के केंद्रीय कार्यालय में लोकार्पण किया गया। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि यह एलबम सिक्ख कौम के लिए एक बहुमूल्य निधि है। इस एलबम से विदेशों में बैठे सिक्ख श्रद्धालु तथा सतर्क पाठक केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय की तसवीरें एवं सिक्ख इतिहास की जानकारी पूर्ण रूप में प्राप्त कर सकेंगे।

स. दिलजीत सिंघ, अपर सचिव तथा स. सिमरजीत सिंघ, संपादक, गुरमति प्रकाश-गु
संपादना में तैयार की गयी

इस एलबम में सिक्ख गुरु साहिबान, सिक्ख धर्म के महान सिंघ-सिंघणियों, सिक्ख राजा-महाराजाओं, सिक्ख जरनैलों के चित्रों के अतिरिक्त सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के भूतपूर्व ग्रंथी सिंघ, जत्थेदार साहिबान, प्रसिद्ध रागी, ढाडी तथा प्रचारक, गुरु-घर के कार-सेवक, संत-महापुरुष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के भूतपूर्व अध्यक्ष साहिबान तथा सदस्य साहिबान, सिक्ख स्वतंत्रता-संग्रामी, पंजाबी सूबा मोर्चा के शहीद, नकली निरंकारी कांड के शहीद, धर्म युद्ध मोर्चा, रेल, बस, हादसे के शहीद, रसता रोको आंदोलन-१९८३ के शहीद, सिक्ख इतिहासकार तथा विद्वान, प्रसिद्ध आर्टिस्ट, फौज के सिक्ख अफ़सर, प्रमुख सिक्ख शख़्सियतों के अलावा विरासती निशानियां, शहीद सिंघों के शस्त्र तथा ककार, बीसवीं सदी की तोपें, टैंक तथा अन्य बंदूकों-तोपों में प्रयोग की जाने वाली गोलियों-बमों के खोल, १९वीं तथा २०वीं सदी के चित्र, गुरबाणी की पुरातन हस्तलिखित पोथियां, पुरातन रंगीन नक्शा श्री दरबार साहिब आदि के बारे में भरपूर जानकारी दी गयी है, जो पाठकों के ज्ञान में बढ़ोतरी करेगी।

इस एलबम की फोटोग्राफी स. सिमरजीत सिंघ, संपादक गुरमति ज्ञान-गुरमति प्रकाश द्वारा की गयी है। इसकी सुंदर ग्राफिक डिजाइनिंग बीबी मनमोहन कौर ने की है। इसकी संपादना स. सिमरजीत सिंघ तथा स. दिलजीत सिंघ ने की है। इस एलबम की विद्वान वर्ग की तरफ से खूब प्रशंसा की जा रही है।

धार्मिक परीक्षा-२०१३ की समय-सारिणी घोषित

श्री अमृतसर : **13** सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा प्रत्येक वर्ष नवंबर माह में धार्मिक परीक्षा आयोजित की जाती है, जिसमें देश भर में से स्कूलों-कॉलेजों के रेगुलर विद्यार्थी भाग लेते हैं। वर्ष **2013** के नवंबर माह में होने वाली धार्मिक परीक्षा की समय-सारिणी की घोषणा के अनुसार **13** व **14** नवंबर, **2013** को सभी केंद्रों पर परीक्षा ली जाएगी।

समय-सारिणी की घोषणा करते हुए धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. सतबीर सिंघ ने बताया कि **13** नवंबर, **2013**, दिन बुधवार को गुरबाणी एवं गुरु-इतिहास विषय पर तथा **14** नवंबर, **2013**, दिन वृहस्पतिवार को सिक्ख इतिहास एवं सिक्ख रहित मर्यादा विषय पर परीक्षा ली जाएगी। परीक्षा का समय प्रात: **10:00** बजे से लेकर दोपहर **1:00** बजे तक का होगा।

अन्य जानकारी देते हुए स. सतबीर सिंघ ने बताया कि **13-14** नवंबर, **2013** को ली जाने वाली दो दिवसीय धार्मिक परीक्षा के लिए दाख़िला प्राप्त कर चुके विद्यार्थियों को अनुक्रमांक उनके स्कूल-कॉलेज के पते पर भेजे जा रहे हैं। यदि किसी विद्यार्थी या स्कूल-कॉलेज को **7** नवंबर, **2013** तक अनुक्रमांक न मिले तो कार्यालय, धर्म प्रचार कमेटी के धार्मिक परीक्षा विभाग के दूरभाष नंबर **0183-2553957, 58, 59,** एक्सटेंशन **305** या मोबाइल नंबर **84374-62555, 98141-33305** पर प्रात: **10:00** बजे से सायं **4:30** बजे तक संपर्क किया जा सकता है।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१०-२०१३